SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 09
February - 2026, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

फरवरी-2026

रु.20/-

श्रीनिवासमंगापुरम्

श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

दि.07-02-2026 से दि.16-02-2026 तक

दिनांक	वार	दिन	रात
07-02-2026	शनिवार	- - -	सेनाधिपति उत्सव, अकुरार्पण
08-02-2026	रविवार	ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
09-02-2026	सोमवार	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
10-02-2026	मंगलवार	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
11-02-2026	बुधवार	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
12-02-2026	गुरुवार	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुड़वाहन
13-02-2026	शुक्रवार	हनुमद्वाहन, सा.वसंतोत्सव, स्वर्णरथ	गजवाहन
14-02-2026	शनिवार	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
15-02-2026	रविवार	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
16-02-2026	सोमवार	चक्रस्नान	ध्वजावरोहण

जगत् कल्याण कारक दंपति श्री पद्मावती श्रीनिवास आज को भी नित्य नूतन वधू-वर के रूप में दर्शन देकर श्रीनिवासमंगापुरम् में दर्शन दे रहे हैं।

- तिरुपति शहर को पश्चिम दिशा में दश कि.मी. की दूरी पर यह श्रीनिवासमंगापुरम् क्षेत्र विराजमान है।
- इस क्षेत्र के उत्तर दिशा में शेषाचल पर्वत शिखर, नैऋति में चंद्रगिरि किला बहुत शोभायमान रूप से दिखाते है। हरे-भरे वातावरण में स्थित यह मंदिर पौराणिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व का स्थान है।
- पद्मावती-श्रीनिवास का परिणय होने के बाद कुछ समय तक इस प्रांत में निवास किया था।
- यहाँ अर्चामूर्ति के रूप में कल्यण वेंकटेश्वर स्वामी ने उपस्थित हुई।
- ताल्लपाका अन्नमय्या के पोता चिन्नन्ना (चिनतिरु वेंगलनाथ) श्रीनिवासमंगापुरम् में कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर को जीर्णोद्धार किया।
- दि.26-04-1967 को इस मंदिर को ति.ति.दे. ने अनुबंध मंदिर के रूप में स्वीकार किया।
- 1981 वर्ष से इस मंदिर में वैभवोपेत ढंग से ब्रह्मोत्सव को संपन्न किया जा रहा है।
- भक्तों का विश्वास है कि - इस मंदिर में भगवान जी के कल्याणोत्सव के बाद देने वाले कल्याण कंकन (दागा) को अविवाहित धारण करे, तो देरी न होकर तुरंत विवाह हो जाते हैं।

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्।
(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-३५)

और जिनकी दृष्टि में तू पहले बहुत सम्मानित होकर अब लघुता को प्राप्त होगा, वे महारथीलोग तुझे भय के कारण युद्ध से हटा हुआ मानेंगे।

नरहरि नी दयमीदट ना चेतलु गोन्ना
शरणागतियुनु जीवुनि स्वतंत्रमु रेंडा ॥ नरहरि॥

मेरयुचु नरकपु वाकिलि मूसिरि हरि नी दासुलु
तेरचिरि वैकुंठपुरमु तेरवुल वाकिल्लु
नुरिपिरि पापमुलन्नियु नुग्गुग निटु तूर्पेत्तिरि
वेरवमु वेरवमु कर्मपु विधुलिक माकेला ॥ नरहरि॥

वापिरि ना यज्ञानमु परमात्मुड नी दासुलु
चूपिरि निनु ना मतिलो सुलभमुगा नाकु
रेपिरि नीपै भक्तिनि, रेयिनि बगलुनु नालो
वोपमु वोपमु तपमुल ऊरिके इकनेला ॥ नरहरि॥

दिद्दिरि नी धर्ममुनकु देवा श्री वेंकटेश्वर
अद्दिरि नी दासुलु नी यानंदमुलोन
इद्दरि नी ना पोंदुलु येर्पेरचिटुवले गूर्चिरि
वोद्दिक वोद्दिक नाकिक उद्योगमुलेला ॥ नरहरि॥

शरणागति तथा जीव की स्वतंत्रता से 'भागवत-निष्ठा' ही उच्चतम है। आनंदविभोर होते हुए वे परमात्मा से कहते हैं कि हरिदासों ने हम भक्तों के लिए 'नरक द्वार को बंद कर, 'वैकुंठ द्वार' को खोल रखा है। हमारे किये हुए पापों को उन्होंने जड से उखाड भी दिया। अब पाप और पुण्य कर्मों के फलों के बारे में सोचकर चिंतित होने की आवश्यकता ही क्या है? हे परमात्मा! तुम्हारे भक्तों ने मेरे अज्ञान को भी मिटाकर, तुम्हें मेरे मन ही में बिठाया है तथा तुम्हारे प्रति भक्ति को भी मेरे मन में उन्होंने ही जगाया है। तो अब जप-तपों की आवश्यकता कहाँ है? हे स्वामी! उन भक्तों ने मेरे चरित्र को भी इस तरह सुधारा है, ताकि मैं सदैव भागवत धर्म का अनुसरण करता हूँ। ब्रह्मानंद के माधुर्य को भी चखाकर, हम दोनों का मिलन भी उन भक्तों ने रचाया है। तो फिर अब मुझे अन्य व्यवसायों की आवश्यकता ही क्या है?

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

सप्तगिरि

पत्रिका चंदा विवरण

◆ 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है।

◆ 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका में कई आध्यात्मिक अंश प्रकाशित हो रहे है।

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका तेलुगु, तमिल, कन्नड, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रहे है।

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका के वार्षिक चंदा रु.240/-.

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका के जीवन (12 वर्ष ही मात्र) चंदा रु.2,400/-.

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा रु.1,030/-.

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका के चंदा भरने के लिए पाठक गण मांगड्राफ्ट(D.D.), ई.एम.ओ (EMO), भारतीय डाकघर (IPO) और ऑनलाइन (ttdevasthanams.ap.gov.in) के द्वारा दर्ज कर सकते हैं।

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका चंदा केलिए पाठक किसी भी जातीय बैंक में 'चीफ एडिटर, सप्तगिरि मागजैन, टि.टि.डी., तिरुपति' के नाम पर डी.डी. लेकर, डाकघर के द्वारा संबंधित विवरण लिख कर, 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति' पते को भेजना चाहिए।

◆ चंदादार अपने घर का पता, पिनकोड, मोबाइल नंबर, वांछित भाषा विवरण स्पष्ट रूप से लिख कर भेजना चाहिए।

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका समय पर नहीं पहुँचे, तो घर के पते में कोई परिवर्तन हुई, तो यहाँ सूचित ई-मेइल (chiefeditortpt@gmail.com) से कृपया संपर्क करें।

◆ अतिरिक्त समाचार के लिए दूरभाष-0877-2264543 / 2264359 से संपर्क करें।

◆ अन्य विवरण केलिए ''प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 507'' पते पर संपर्क करें।

◆ सीधे संपर्क करना चाहिए है, तो प्रधान संपादक कार्यालय के समयों में संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-56 फरवरी-2026 अंक-09

गौरव संपादक
श्री अनिल कुमार सिंघाल, I.A.S.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D.,
P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

विषयसूची

कपिल तीर्थ	डॉ.टी.लता मंगेश	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	10
लेपाक्षी श्री वीरभद्रस्वामी मंदिर	डॉ.एच.एन.गौरीराव	14
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यह्नपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	18
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	21
श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	25
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	31
माघ मास का महत्व	श्री अवधेश कुमार शर्मा	35
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	38
ईश्वर ही हमारा सच्चा साथी है	श्री गजानन पाण्डेय	39
आध्यात्मिक चन्द्रोदय	श्री वेमुनूरि राजमौलि	41
मोरिंगा (सहजन / शिग्रु)	डॉ.सुमा जोषि	43
फरवरी महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - अनमोल भेंट	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - माँ के प्यार के सामने नतमस्तक होने ही होगा	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 43		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - editorsapthagiri@gmail.com

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी, श्रीनिवासमंगापुरम्।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री कुलशेखराल्वार का वर्णचित्र।

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

जीवन के लिए आवश्यक चीजें!

भगवान एक ही है जैसा सुदृढ़ भाव हमारे सनातन हैंदव धर्म के द्वारा विदित होता है। स्वर्ण एक ही है, परंतु विविध प्रकार के रूप में आभरण बन जाता है। वैसे ही एकी रूप भगवान विविध देवी देवता के रूप में पूजाएँ स्वीकार करके सुस्पष्ट समन्वय हमारे सनातन धर्म में दिखाई देता है। कितनी आभूषण को देखने पर भी एकी धातु से बने स्पृहा जैसा विदित होता है - वैसे ही विविध नाम, रूपों में प्रकटित हुए भगवान भी एकी परमात्मा चिंतन की भावना भी वैसे ही रहती है। लेकिन 'लोकोभिन्न रुचि'। उपासना करने की क्षमता हुए लोग महामंत्र, तंत्रों से साधना करते हैं। निर्गुण तत्त्व को ग्रहण करने वाले योग पुरुष अंतर्लीन अतरंग में ही भगवान को आविष्कार करते हैं। पंडितगण अपना भाषणों के द्वारा भगवान वैभव और तत्त्व को साधारण आमतौर जनता तक पहुँचाने का कोशिश करते हैं। सभी को समाधान देने के लिए भगवान भी अनेक रूपों में विभक्त होकर व्यक्त होते हैं। ये हमारा सनातन धर्म का मौलिक स्वरूप हैं।

हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक ज्योतिर्लिंग स्वरूप में विराजित भगवान शिव वेद-वेदांगों से रुद्राभिषेक को स्वीकार करते है और साथ-साथ आम जनता का जलधाराभिषेक को भी स्वीकार कर आनंद परवश होते हैं। 'भं... भं... भोले', 'हरा हरा महादेव' जैसा ध्वनि तरंगों से रोमांकित होने वाले भगवान ही 'मकड़ी-सांप-हाथी' जैसा जीवि को मुक्ति देकर, भक्त कन्नप्पा को अनुग्रह देनेवाली 'श्रीकालहस्तीश्वर'; 'नंदनार' को मुक्त प्रदान किये गये 'चिदंबरेश्वर' भगवान जी अनन्य भक्ति तत्पर भक्तों को कैवल्य प्रदान किया। पंडितगणों से लेकर पामर लोगों तक, योग सिद्ध पुरुषों से लेकर श्रमजीवियों तक, वेद-वेदांग पंडित लोगों से लेकर जानपद कलाकारों तक... सभी प्रकार के स्थाई-भेद भाव, विविध प्रकार के धर्मरीतियों के रूप में तैयार करके एक महावृक्षराज के जैसा आविर्भूत हुई चैतन्य शक्ति ही 'हिन्दू धर्म' है। इस वैविध्य लक्षण के कारण से लोगों से प्रशंशा प्राप्त ले रहे हैं। सकल चराचर जीवराशि प्राणीकोटि को हमारा संस्कृति में दैव को दिखाते हैं। विविध लोकों के साथ हर एक रेणु में हमारे भगवान विस्तार हो पाकर दर्शन देते हैं। परमात्मा अत्युन्नत स्थाई में होने पर भी समय के अनुसार अवतार को धारण कर हमारे जीवन को रक्षा देते हैं। बेज्ञा महादेवी, तिन्नडी जैसा भक्तगणों का चरित्रों से मालूम पड़ता है कि ईश्वर भक्तवत्सल प्रिय है।

शिवाराधना भक्ति को, आत्म शुद्धि को, लोकक्षेम के लिए एक शाश्वत मार्ग दर्शक है। शिवाराधना में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सेवाभाव सम्मिलित मिश्र होता है। शिवाराधन में उपयोग करे बिल्व पत्र, गंगाजल, दूध, शहद, धूप, दीप जैसे चीजों को समर्पण करने से आराधन करनेवाले व्यक्ति के मन में पवित्र भाव को उत्पन्न करते हैं। माघमास में अति पवित्र दिन महाशिवरात्रि के अवसर पर जागरण करके, लिंगाभिषेक करे, तो महापुण्य प्रद कार्य है। शिव भगवान समन्वय का प्रतीक है। इनमें सौम्य, रौद्र, करुणा, न्याय आदि समाहार है। भगवान शिव भूतजाति को समान रूप से देखती है। शिव नाम स्मरण माने अनंत तत्त्व को स्मरण करना ही है। शिवानुग्रह से जन्मबंधन से मुक्ति मिलती है। भक्ति, क्षमा, दया, धर्म, त्याग जैसा सर्वोत्कृष्ट भावनाएँ शिवाराधन से हमारे हृदय में शाश्वत रूप से विराजित होते हैं। शिव के गुणों को हमारे जीवन में पालन करे, तो भौतिक विजय के साथ आध्यात्मिक विजय को भी प्राप्त कर सकते हैं। शिव का सेवा से ही लोकहित, आत्महित संभावना होती है। शिवाराधन से भक्ति की पराकाष्ट, जीवन का परमावधि बन जाता है।

कपिल तीर्थ

- डॉ.टी.लता मंगेश

कपिल तीर्थ तिरुपति में तिरुमल पहाड़ियों की तलहटी में स्थित एक प्राचीन शैव मंदिर और पवित्र तीर्थ है। यहाँ स्वयंभू कपिलेश्वर शिवलिंग है, जिसे ऋषि कपिल ने स्थापित किया था। यह मंदिर एक पहाड़ी गुफा के प्रवेश द्वार पर बना है, जहाँ शेषाचलम पहाड़ियों से बहने वाला जल सीधे मंदिर के गुफा के निकट गिरता है। प्रवेश पर नंदी की पाषाण मूर्ति है, और आस-पास प्राकृतिक झरने व हरी-भरी वादियाँ हैं। यह तिरुपति से लगभग डेढ़ मील दूर अलिपिरि के पास स्थित है।

मंदिर के स्थल पुराण के अनुसार, कृतयुग में, कपिल मुनि ने भगवान शिव के लिए कठोर तपस्या की। स्थल पुराण कहता है कि उस तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ने धरती को पाताल से अलग करके यहाँ प्रकट हुए। कपिल मुनि की कठोर तपस्या के कारण भगवान शिव प्रसन्न होकर प्रकट हुए और यहीं बस गए, इसलिए इस भगवान का नाम कपिलेश्वर पड़ा। यहाँ के लिंग को कपिल लिंग भी कहा जाता है। तदुपरांत, त्रेतायुग में, भगवान अग्नि देव ने इस मंदिर में तीन लिंगों की पूजा की। इसलिए, इस लिंग को दक्षिण-पूर्व लिंग भी कहा जाता है। यहाँ, भगवान कपिलेश्वर देवी कामाक्षी के साथ विराजमान हैं।

इस मंदिर के चारों तरफ दिखाई देने वाली तिरुमल पहाड़ियों भक्तों को एक आध्यात्मिक अनुभव देती हैं। उन पहाड़ियों से लगभग 20 फीट की ऊँचाई से मंदिर की पुष्करिणी में बहने वाली आकाश गंगा को कपिल तीर्थ कहा जाता है। इस तीर्थ को शैव लोग कपिल तीर्थ और वैष्णव लोग आल्वार तीर्थ कहते हैं। झरने के चारों तरफ सीढ़ियाँ बनी हैं, इसलिए भक्त यहाँ पवित्र स्नान करते हैं। यहाँ झरना जितना खुबसूरत है, उतना कपिल तीर्थ में होने वाली पूजाएँ भी विशेष है।

मंदिर का इतिहास

ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर पता चलता है कि यह मंदिर 11वीं सदी के प्रथम राजेन्द्र चोल के शासन में निर्माण किया गया था। साथ ही यह भी कहा जाता है कि 16वीं सदीं में विजयनगर से आई सेवुसानी नाम कि एक देवदासी ने इस मंदिर कि बहुत सेवा कि तथा उसने भगवान गणपति को प्रतिष्ठित किया।

नम्माल्वार आलय

जहाँ चोलों ने खुबसूरत कपिल तीर्थ का विकास किया वहीं अच्युत देवराय के राज्य में वैष्णवों ने इसे आल्वार तीर्थ में परिवर्तित किया मंदिर में प्रवेश करने से पहले हमें नम्माल्वार नाम का आल्वार मंदिर दिखाई देता है। भक्त नम्माल्वार मंदिर का दर्शन करने के उपरांत भगवान शिव के दर्शन करते है।

कपिल तीर्थ में कपिलेश्वर स्वामी के साथ काशी विश्वेश्वर, सहस्रलिंगेश्वर, लक्ष्मी नारायण, श्रीकृष्ण, अगस्त्येश्वर, कार्तिकेय जैसे अन्य भगवानों के उपालयों का भी हम दर्शन कर सकते है।

परमपवित्र कपिल तीर्थ पुण्य क्षेत्र नित्य पूजाओं, धूपदीप, नैवेद्य (प्रसाद) और भक्तों से हमेशा भरा रहता है, तिरुमल क्षेत्र दर्शन के लिए आनेवाले प्रत्येक भक्त को कपिल तीर्थ का भी दर्शन करना आवश्यक है।

तीनों लोकों के सभी तीर्थ यहाँ हैं

माना जाता है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन, दोपहर के समय, तीनों लोकों के सभी तीर्थ चार घंटे के लिए कपिल तीर्थ में आते हैं। कहा जाता है कि अगर भक्त उस समय इस तीर्थ में पुण्य स्नान करते हैं, तो उनके सभी पाप रेशम के धागे की तरह धुल जाते हैं। इसीलिए कार्तिक महीना शुरू होते ही इस मंदिर में भक्तों की भीड़ लग जाती है।

प्रतिदिन, भक्त इस मंदिर में पवित्र स्नान करते हैं और भगवान को प्रसन्न करने के लिए दीप दान करते हैं। इसके अलावा, आरुद्रा नक्षत्र के दिन यहाँ विशेष पूजा होती है, जो भगवान शिव को बहुत पसंद है। विशेष तौर पर कार्तिक माह में पड़ने वाले आरुद्रा नक्षत्र के दिन मंदिर में एक लाख बिलों से अर्चना किया जाता है जिसे बिल्वार्चन कहते हैं और अन्नाभिषेक भी किया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा पर कपिल तीर्थ में भगवान शिव का विशेष अन्नाभिषेक किया जाता है। भक्तों का मानना है कि अगर वे इस त्योहार को अपनी आंखों से देखें और प्रसाद के तौर

पर थोड़े से चावल खाएँ, तो सभी बीमारियाँ ठीक हो जाएँगी और सभी पाप नष्ट हो जाएँगे। साथ ही, पुष्य महीने में पूर्णिमा से पहले वाले शुक्रवार को यहाँ देवी कामाक्षी को चंदन की साड़ी बांधी जाती है। भक्तों का मानना है कि जो लोग चंदन की साड़ी में देवी के दर्शन करते है। उनके सारे मनोकामनाएँ पूर्ण होती है।

ब्रह्मोत्सव के सुबह अवसर पर भगवान परम शिव की उत्सवमूर्ति को विभिन्न वाहनों पर सुशोभित कर तिरुवीथियों में ले आते है। दस दिन तक अत्यन्त वैभव से मनाएँ जाने वाले ब्रह्मोत्सव ध्वजारोहण से आरम्भ होता है। जिसमें नंदी के चित्र से अंकित ध्वज पटल को ध्वजारोहण किया जाता है। उस दिन से लेकर भगवान शिव निम्नांकित विविध वाहनों पर आरूढ होकर भक्तजनों को दर्शन देते है।

इस प्रकार विभिन्न वाहनों पर विराजित होकर परम शिव भक्तों के निकट आते हैं।

निष्कर्षतः कपिल तीर्थ एक ऐतिहासिक और परम पवित्र तीर्थ स्थान है जिसका भारतीय संस्कृति और धर्म में विशेष महत्व है। यह स्थान हमें महर्षि कपिल की तपस्या साधना और ज्ञान की परम्परा से जोड़ता है। यह पवित्र क्षेत्र न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है बल्कि हमें भारतीय संस्कृति की महान परम्पराओं को समझाने और अपनाने की प्रेरणा भी देता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्योहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए 3 महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

पंचमाश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

मंगल स्नान और श्रृंगार करना :

हरि का इस रूप में आदर करते हुए, ब्रह्मादि को देखकर अब क्यों देर कर रहे हैं? सब मिल कर अपने अपने काम शुरू कर लीजिए। चक्री का अभ्यंगन स्नान करवा दीजिए। ''इस रूप में लक्ष्मी की आज्ञा होने पर सब अपने अपने कामों में जुट गए। तब ब्रह्म ने गरुड़ और शेष को भेज कर सारे पुण्य तीर्थों से जल को कलशों में भर कर उस शेषाद्री पर मंगाया। तब क्रम से कुंकुम मिलाकर चारों दिशाओं में रखकर, सूत्रों को उन के चारों ओर बांधने केलिए ब्रह्म ने कहा।'' ब्रह्म के इस रूप में कहने पर तब पार्वती आदि प्रमुख स्त्रियाँ मंगल स्नान करके रंगीले वस्त्र और आभरण धारण करके दीप कलश, मंगल आरतियाँ हाथों में लेकर कल्याण के गीत गाते शुभ कार्य शुरू किया। ब्रह्म के द्वारा पहले बताने की तरह चारों दिशाओं में कुंकुम मिलाये पुण्योदक कुंभों को रखा। हर्षातिरेक में वरसूत्र बांध कर सुहागिनें मिल कर उन कुंभों के बीच में शोभित एक पीढे को रखा। तब ब्रह्म के द्वारा 'विवाह के पीढे पर बैठिए' कहने पर हरि ने लक्ष्मी की तरफ देखा। तब लक्ष्मी ने वासुदेव के चेहरे को ऊपर उठाकर विचित्र ढंग से देखा। गाल पर हाथ लगाकर, सिर झुकाकर, पाद की उंगली से जमीन पर लिखते हुए, मन में चिंता करते हुए, चेहरे को बिगाड कर, वहाँ होने वाले उत्सवों की तरफ नहीं देखते हुए दिखाई पडनेवाली दुःखी रमासति को देखकर हरि ने अपने मन में इस रूप में सोचा। ''मेरा विवाह करना पद्ममुखी को पसंद नहीं है। इसलिए चिंता कर रही है। अब मैं क्या करूँ?'' ऐसा सोचते तिरछी आँखों से बार बार रमासति की ओर देखते हुए दया करके ब्रह्म को देखकर चक्री ने कहा। ''हे विधाता! इस विवाह के लिए मेरे राजी होने से मेरा अपराध हो गया है। इस विवाह से मुझे क्या चाहिए? अब मुझे यह नहीं चाहिए। आप सब आज ही अपने अपने स्थानों पर वापस लौट जाइए। मैं भी पहले की तरह वल्मीक के गर्भ में दुबक कर रहूँगा। माता-पिताहीन परदेशी को अब विवाह क्यों चाहिए? सारी दिशाओं के नाथ होते हुए भी मैं आज अनाथ और अकेला हूँ। चुपके से आकाश से इस मिट्टी पर गिर कर, पेट भरने के लिए मनुष्यों से याचना करते हुए जीना ही मेरे लिए बाकी रह गया है। ऐसे मुझ में विवाह की इच्छा पैदा नहीं होनी चाहिए। इसलिए मुझे अभ्यंगन स्नान नहीं करना चाहिए।'' कहने पर ब्रह्म देव भयभीत होकर श्री स्वामी की ओर देखकर उन के पाद पद्मों

को नमस्कार करके इस रूप में कहा। ''हे देव! महालक्ष्मी आप को नित्य अनुपाईनी बन कर पत्नी होकर, मैं और मन्मथ पुत्रों के रूप में रहते हुए, बाकी रुद्र-इंद्रादि देवतागण पोतों के रूप में रहते, परपोते होते वृद्धि करते रहे। सब के लिए आधार भूत बनकर कूटस्थ ब्रह्म के रूप में रहनेवाले आप को यह चिंता क्यों हैं?'' ब्रह्म के इस रूप में बोलने पर हरि ने कहा। ''दया से मेरे हाथों में तांबूल देकर मुझे आशीर्वाद देते हुए मुझ से अभ्यंगन स्नान करानेवाला कौन है?'' कहते चिंता करते हुए आँखों से आँसू बहाते हरि सिरि की तरफ देखते रहे। तब सिरि की ओर इशारा किया हरि ने। तब लक्ष्मी हरि के पास आकर हँसते हुए दोनों हाथों को पकड कर उठाया। तब अपने मन में रहनेवाली चिंता को छोड कर मोद से वसिष्ठ आदि मुख्य मुनियों को नमस्कार करके, उन से आशीष पाकर हरि विवाह के पीटे पर बैठ गए।

तब अरुंधती आदि प्रमुख सुहागिनें मंगल गीत गाते मंगल वाद्यों के बजते, उस महालक्ष्मी के साथ पार्वती, सावित्री, गायत्री और सरस्वती ने कुंकुमोदकों को थालियों में भर कर गीत गाते आरती उतारी। तब रमादेवी ने मंगलाक्षतों को हरि के ललाट, शीर्ष पर डाल कर कपूर तांबूल को स्वामी के हाथों में देकर दीर्घ नील कुंतलों को संवार कर, सोने के कटोरे में संपंगी तेल भर कर दीर्घायु के साथ, इष्टपुत्र को प्राप्त करके, चतुर्दश भुवनों का सम्राट बन कर वृद्धि करो! हे महा स्वामी! ऐसा आशीर्वाद देते हुए अभ्यंगन स्नान करवाया। कर्पूर, गंध, कस्तूरी, हरिद्राचूर्ण, जवादी आदि को मिलाकर हरि का उबटन लगाया। बाद में शुद्ध जल से स्नान करवाया। इस रूप में करने से जन्म धन्य हो गया, ऐसा लक्ष्मी ने मन में सोचा। तब पार्वती, सावित्री, गायत्री और सरस्वती ये चारों ने चार कलशों से कुंकुमाभिषेक किया। लक्ष्मी के साथ मिलकर उस पुण्य तीर्थ को हथेलियों में भर कर चारों ने ''श्रीराम की रक्षा हो'', ''दीर्घायु हो'' कहते हरि के सिर पर चिढकाकर हरि को आशीर्वाद दिया।

सावित्री के वस्त्र लाकर देने से सिरि ने पानी पोंछ कर मस्तक पर सहलाकर, बालों को ठीक करके सुंदर ढंग से हरि की चोटी बनायी। गौरी के वस्त्र देते हरि ने उन्हें पहन लिया। लक्ष्मी ने धूप लगायी। सरस्वती के द्वारा दिए गए वररत्न भूषणों से लक्ष्मी ने हरि को सजाया। गायत्री ने मुकुट को दिखाया। रति, शचि ने चामर किया। पवन की सति ने छत्र पकड कर खडी हो गयी। गंगा ने पादुकाएँ दीं। तब श्रीकांत ने पादुकाएँ पहन लीं। तब हरि पैदल चलते ब्रह्म सभा के पास आकर सिंहासन पर बैठ गए। तब सारे मुनिगणों को देखते हरि ने ऊर्ध्वपुंड्र धारण किया।

ब्रह्म को देखकर तब 'लक्ष्मी को अभ्यंगन और मंगल स्नान करवाइए।' कहने पर ब्रह्म ने जाकर पार्वती, भारती आदि प्रमुख सुहागिनों को बुलाकर ''उस जगज्जननी के अभ्यंगन स्नान करवाइए।'' ऐसा आदेश दिया। सिरि को पीढे पर बैठने के लिए कहा गया तो सर झुकाकर सिरि ने ब्रह्म की तरफ देखकर कहा। ''हे वनरुहभव! मैं अभ्यंगन स्नान नहीं करूँगी। शीघ्र ही मैं स्नान करूँगी।'' सिरि की इन बातों को सुन कर हरि ने संशय से इस रूप में कहा। ''हे सागर तनया! अब तुम अभ्यंगन स्नान के लिए राजी नहीं होगी तो विवाहोत्सव को मैं नहीं चाहूँगा।'' हरि के इस रूप में बोलने पर हँस कर रमादेवी चुप रह गयी। तब पार्वती और सुहागिनों ने सिरि का अभ्यंगन स्नान करवाया। तब सिरि को हल्दी से उबटन लगाकर शीघ्र ही उन का स्नान करवाया। पानी पोंछ कर नये वस्त्रों को धारण करवाया। बालों को संवार कर, अलग अलग जटाओं में

उन्हें बांधकर, कुंकुम तिलक ललाट पर लगाकर, आंखों में काजल लगाकर, शरीर पर श्रीगंधादि मल कर, क्रम से रत्न भूषणादि से सिरि का श्रृंगार किया। बाद में विवाह के गीत गाकर प्रीति से सिरि को लिवा लाकर चक्री के साथ सिरि को उन्होंने बिठा दिया। तब शिव हरि और सिरि को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए।

उस समय वसिष्ठ आदि महामुनिगण, सनकसनंदादि योगीश्वर, इंद्रादि देवतागण, गरुड़, गंधर्वादि के द्वारा लक्ष्मी और नारायण को आनंद से देखते समय, यह शुभ लग्न है, ऐसा ज्योतिषियों के बताने पर, सुन कर वकुला मालिका ने हल्दी, कुंकुम आदि मंगल द्रव्यों को सोने की थालियों में लाकर स्वामी की सन्निधि में रखा। 'हरि का श्रृंगार कीजिए।' लक्ष्मी से कहने पर सुन कर लक्ष्मी ने अपने स्वामी का श्रृंगार किया। तब कुबेर ने दिव्य रत्न भूषण और वस्त्रों को लाकर लक्ष्मी को दिया। तब लक्ष्मी ने उन दिव्य भूषणांबरों के साथ स्वामी का श्रृंगार करके बहुत आनंद का अनुभव किया। तब वसिष्ठ, कश्यप आदि प्रमुख महामुनियों को चक्री ने संप्रदाय के अनुसार नमस्कार किया। तब वसिष्ठ ने मोतियों से चतुरस्राकार में विवाह की वेदिका की रचना की। उस में वेंकटाद्री के पति श्रीनिवास को तथा उन की सति लक्ष्मी को बिठाया। फिर उस के पूरब भाग में होमकुंड का निर्माण किया।

कुल देवता की पूजा करना :

यजुश्शाखानुसार, वैखानस सूत्रोक्तों के अनुसार पुण्याहवचन आदि शुभ कार्य पूरे कर दिए गए। सभा में उपस्थित सभी को तांबूलादि दिला कर तदुपरांत हरि की ओर देखकर 'कुल देवता कौन है।' ऐसा पूछा गया। चक्री ने जवाब दिया। ''पांडवों और हमारे लिए शमी वृक्ष ही कुल देवता है।'' चक्री के इस जवाब को सुन कर वसिष्ट ने पूछा ''शमी वृक्ष कहाँ पर है?'' तो कुंभ संभव ने बताया। ''कुमारधारा तीर्थ के समीप है'' तब हरि मंगल वाद्यों सहित ब्राह्मणों को साथ लेकर कुमारधारा तीर्थ पर पहुँच गए। वहाँ पर हरि ने शमी वृक्ष की परिक्रमा करके नमस्कार करके पूजा की। ऐसी प्रार्थना की कि 'निर्विघ्न ढंग से विवाह संपन्न हो जाये।' उस वृक्ष की शाखा को सर पर लाद कर लाकर 'इस कुलदेवता को कहाँ रखना है?' पूछा। तब नारद ने बताया कि वृक्ष की शाखा को वराहस्वामी की सन्निधि के पास रखा जा सकता है। तब हरि वराहस्वामी से अनुमति लेकर वृक्ष की शाखा कुल देवता को मोतियाँ और चावल बिछाकर उस पर रखा। बाद में नये वस्त्र उसे समर्पित करके पूजा की। वहाँ पर अखंड दीप को रखवाया। तब वराहस्वामी को देखकर हरि ने कहा। ''हे श्री वराहस्वामी! तुम और भूदेवी मेरे विवाहोत्सव को देखने आना चाहिए।'' तैयार होकर आने की विनति की। तब वराहस्वामी ने कहा। ''अब पूरा प्रदेश फलों से भरा है। अब मेरा आना संभव नहीं है। मेरी जगह वकुला मालिका विवाह में आयेगी।'' तब अब हमें निकलने की आज्ञा दीजिए। कहते हरि ने ब्रह्म की ओर देख कर यात्रा की भेरी बजाने की आज्ञा दी। तब ब्रह्म ने कहा। ''आज काफी समय निकल गया है। आज यहीं पर भोज करके कल यहाँ से निकल जाएंगे।'' इस रूप में कहनेवाले ब्रह्म को देखकर हरि ने कहा। ''देश काल की जानकारी के बिना तुम यह यत्न करना चाहते हो। चाहने पर भी इस पहाड पर पदार्थ कहाँ प्राप्त होंगे?'' चक्री की इन बातों को सुन कर शिव ने कहा। ''जो यत्न किया गया उसे पूरी तरह निभाना चाहिए। हे हरि! बिना भोज के यहाँ से निकलना ठीक नहीं है।'' इस रूप में शिव के कहने पर हरि सिरि की ओर देखा। 'इस रूप में सिरि से वरदान मांगना मैं उचित नहीं समझता हूँ। यह एक प्रकार की याचना ही होगी।' ब्रह्म और रुद्र को देखकर हरि ने कहा। वल्मीक के समीप में पार्वती आदि प्रमुख सुहागिनों के साथ बैठी लक्ष्मी से मांगे बिना पुष्करिणी तीर्थ के पास अश्वत्थ वृक्ष की छाया में बैठ कर कुबेर को अपने पास बुलाया हरि ने। एकांत में कुबेर से हरि ने इस रूप में कहा।

श्री वेंकटेश्वर के द्वारा कुबेर को ऋण पत्र लिख कर देना :

''हे कुबेर! मैंने विवाह करने का यत्न किया। किंतु मेरे पास अब धन नहीं है। विवाह के लिए लक्ष्मी से धन मांगने

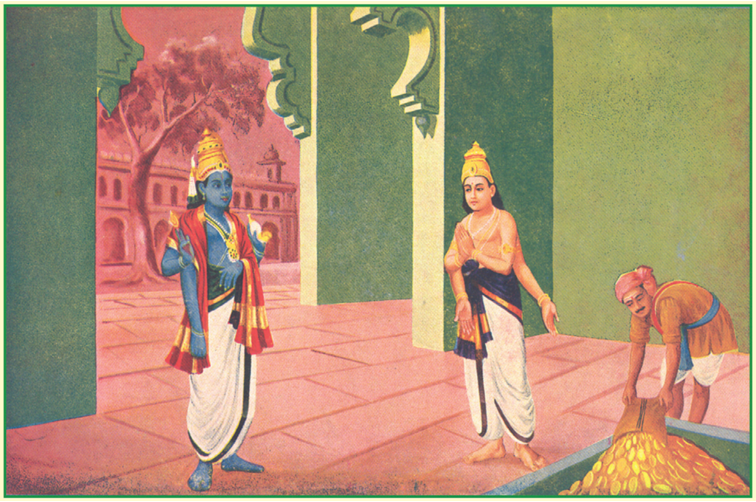

में मुझे संकोच हो रहा है। इसलिए तुम मुझे शीघ्र ही धन दे दो। मैं उधार पत्र लिख कर दूँगा। वर्ष में एक बार ब्याज चुकाता रहूँगा। कलियुग के अंत तक सच सच मूल धन को चुका दूँगा। मेरी बात कपट समझ कर धन देने में इनकार मत करना। ब्रह्म और शिव को मैं साक्षी के रूप में रखकर उधार पत्र लिखाऊंगा।'' हरि के इस रूप में कहने पर कुबेर ने कहा। ''हे पद्माक्ष! आप की कृपा से जितना चाहे उतना धन मैं दे सकता हूँ। आप ब्याज क्यों देंगे? आप का विवाह होना हम सबके लिए संतोष की बात है। इससे बढ कर क्या लाभ हो सकता है। तब हरि ने हँस कर इस रूप में कहा। ''दान लेने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ।

इसलिए हे निर्मलात्मा! उधार पत्र लिखकर दूँगा। धन शीघ्र ही दे दो।'' इस रूप में कुबेर को मनाते हरि ने ब्रह्म और रुद्र की ओर देखकर कहा। ''हे ब्रह्म और रुद्र! इस कलियुग के अंत तक इस धन्य शेषाद्री पर परिपूर्ण विलास के साथ अद्भुत ढंग से सारे सुजनों को दर्शन देते हुए, उन्हें वरदान देते हुए उन से धन वसूल करके कुबेर के उधार को चुकाऊंगा। आप दोनों ही इसके लिए साक्षी हैं। तभी पत्र को मंगाकर अनेक पंक्तियों में उधार पत्र लिखा कर ब्रह्म के हाथों में पढने के लिए उसे दे दिया हरि ने।

तब ब्रह्म ने उधार पत्र को इस रूप में पढा। ''श्रीकर लीला स्वस्ति श्री जयाभ्युदय अष्टादश द्वापांतर के कलियुग के आदिकाल में वेंकटनायक कुबेर को लिखकर दिया गया उधार पत्र ऐसा है कि मेरे विवाह के लिए तुम से उधार के रूप में चतुर्दश लाख रामटेंकि निष्क्रमों को लिया। इस के लिए ब्याज सहस्र राम टेंकि निष्क्रम प्रति वर्ष चुकाकर और कलियुग के अंत तक मैंने जितना कुछ धन लिया उतना लौटा दूँगा। इस के लिए ब्रह्म और रुद्र साक्षी हैं। साथ ही यह अश्वत्थ वृक्ष भी। इस रूप में मेरी सम्मति से स्वलिखित उधार पत्र।''

इस रूप में अच्छे ढंग से उधार पत्र ब्रह्म ने पढ कर शिव को दिया। शिव ने स्वीकार करके उसे कुबेर को दिया। तब कुबेर उस उधार पत्र को लेकर हरि को रामटेंकी निष्क्रमों को गिन कर दिया। कुबेर से तब धन लेकर हरि ने आवश्यक पदार्थों को लाने की आज्ञा दी। तब कुबेर ने विवाह के लिए आवश्यक मंगलसूत्र, भूषणांबर, चावल आदिपदार्थों को मंगवाया। तब हरि ने अग्निदेव को शीघ्र ही भोजन तैयार करने की आज्ञा देते हुए षण्मुख को उस के पास भेजा। तब षण्मुख पावक के पास जाकर हरि की बातों में स्वयं पाक बनाने के लिए कहा।

तब पावक ने कहा। ''बरतन नहीं हैं। मैं कैसे भोजन बनाऊँगा।'' हरि को षण्मुख ने इस समाचार को दिया। हरि ने इस समाचार को सुन कर ब्रह्मादि के सुनते इस रूप में कहा। ''परदेशी के विवाह के लिए बरतनों की जरूरत क्यों है? यहाँ की पुष्करिणी ही दिव्यान्न बरतन है। परिशोभित पापविनाश तीर्थ ही शुद्ध सूप बरतन है, स्वच्छ आकाश गंगा तीर्थ ही सदानंदकर परमान्न बरतन है। गुरुतर तुंबुर घाटी ही चित्रान्न बरतन है। साग सब्जियों को बनाने के घनदेव तीर्थ ही बरतन है। भक्ष्यों को बनाने के लिए बरतन कुमारधारा है। अचारादि बनाने के लिए बरतन पांडव तीर्थ है।'' ऐसा पावक को बताओ हे षण्मुख!

क्रमशः

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर लोक प्रसिद्ध अद्भुत लेपाक्षी वीरभद्रस्वामी मंदिर के बारे में जानने का प्रयास करेंगे। भगवान शिव के उग्र अवतार वीरभद्र को समर्पित यह मंदिर लेपाक्षी गाँव में स्थित है, और इसीलिए इस मंदिर को 'लेपाक्षी मंदिर' भी कहा जाता है। इस मंदिर के बारे में जितनी भी प्रशंसा करो, वह कम ही पड़ता है। समय की कसौटी पर खरा उतरा यह मंदिर अपनी विलक्षणता से छोटे से गाँव में स्थित होने पर भी विश्व विख्यात है, जिन्हें देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं। इस से यह राष्ट्रीय महत्व के केंद्रीय संरक्षित स्मारकों में से एक बना हैं।

लेपाक्षी आंध्र प्रदेश और कर्नाटक की सीमा प्रदेश में स्थित है। यह क्षेत्र आंध्र प्रदेश के हिंदूपुरम से 15 किलोमीटर दूरी पर और बेंगलूरु से 134 किलोमीटर दूरी पर है। इस विस्मयकारी मंदिर के बारे में उल्लेख पुराण, इतिहास, दंतकथाएँ और कन्नड भाषा में लिखित शिलालेख आदि में प्राप्त होते है।

स्कंद पुराण के अनुसार लेपाक्षी मंदिर :

स्कंद पुराण के अनुसार लेपाक्षी मंदिर दक्षिण भारत के 108 शैव क्षेत्रों में से एक है। स्कंदपुराण में उल्लेख मिलता है - 'लेपाक्ष्य-पापनासनः।' स्थल पुराण के अनुसार, विंध्या के दक्षिण में तीर्थस्थलों की यात्रा करते हुए अगस्त्य ऋषि इस कूर्मशिला पर्वत पर एक गुफा में ठहरे थे और उन्होंने ही भगवान पापनाशेश्वर की स्थापना करके उसकी पूजा की। आज भी वह गुफा मंदिर के भीतर देखने को मिलती है।

लेपाक्षी श्री वीरभद्रस्वामी मंदिर

- डॉ.एच.एन.गौरीराव

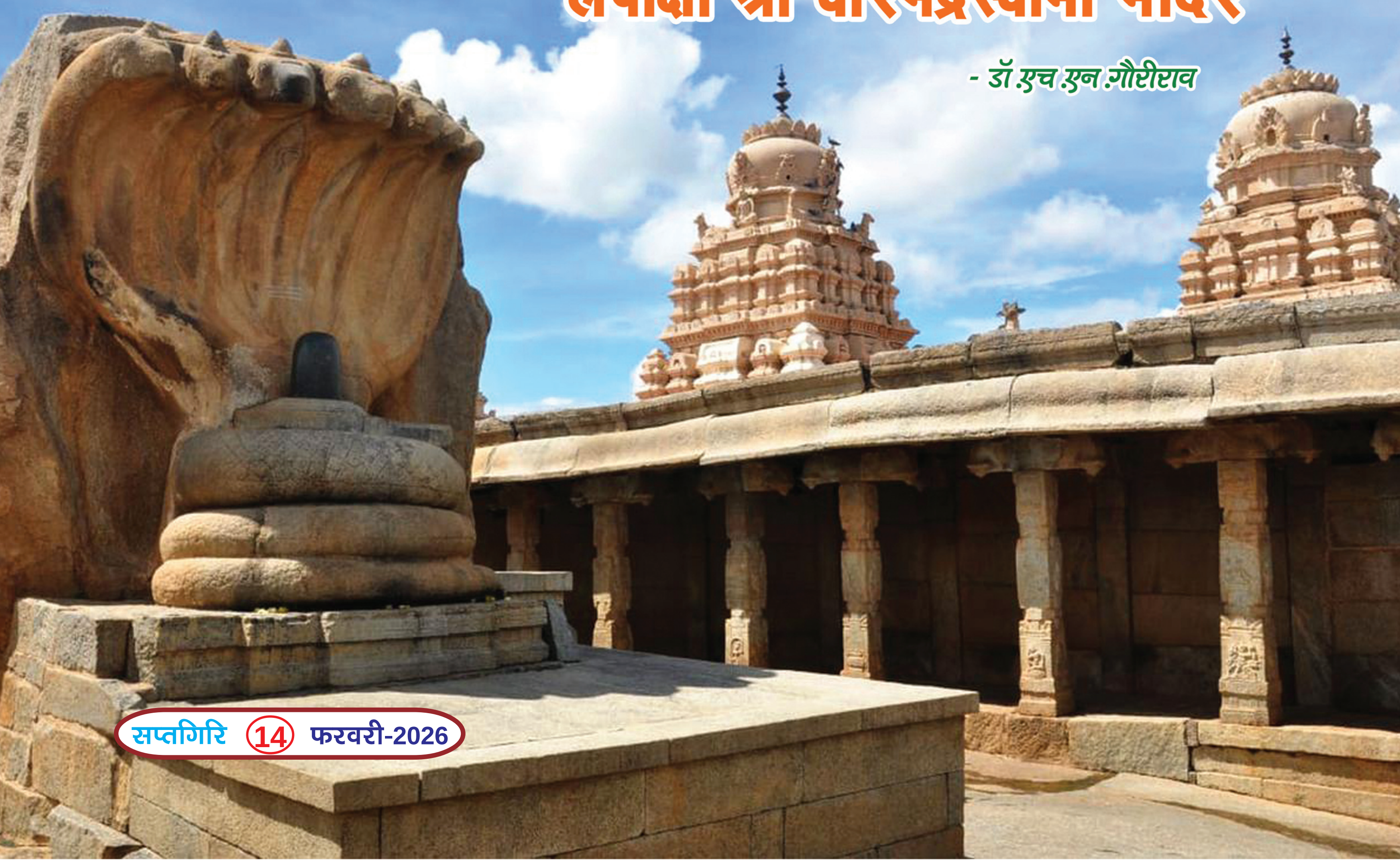

लेपाक्षी का रामायण से संबंध :

प्रचलित मान्यता के अनुसार, लेपाक्षी क्षेत्र का सीधा संबंध रामायण से हैं। कहा जाता है कि इसी जगह पर सीता माता के अपहरण के समय जटायू रावण से लड़कर अपने पंख खोकर घायल होकर गिर पड़ा था और श्रीराम की प्रतीक्षा कर रहा था। माता सीता का अन्वेषण करते हुए श्रीराम घायल जटायु से मिलकर उनका उपचार करके 'ले पक्षी' कहा। तेलुगु भाषा में इसका अर्थ है 'उठो, हे! पक्षी।' आगे चलकर इस पवित्र मंदिर का और इस गाँव का नाम पड़ा 'लेपाक्षी।'

वीरभद्र स्वामी मंदिर निर्माण का इतिहास :

एक और कथन के अनुसार ऋषि अगस्त्य महामुनि से शिवलिंग की स्थापना के अनेक वर्षों के बाद विजयनगर के राजा अच्युतरायलु के शासन काल में (1530-1542 ई.) विजयनगर राज्य के अधीन राज्यपाल तथा कोषाध्यक्ष विरूपण्णा तथा उसके भाई वीरण्णा द्वारा इस मंदिर का निर्माण शुरू किया गया। राजा अच्युतरायलु को बिना बताए विरूपण्णा ने राजकोष से धन लेकर भव्य मंदिर का निर्माण कार्य आरंभ किया। बाद में जब राजा को इस विषय का पता चला तो वे क्रोध से विरूपण्णा की आंखें निकाल कर उसे अंधा बनाने की आज्ञा दी। जब यह खबर विरूपण्णा तक पहुँची तो वे अपने ऊपर लगे कलंक को सह नहीं पाए और उन्होंने स्वयं अपनी आंखों को मंदिर के विवाह मंटपम की एक पत्थर की दीवार पर फेंक दिये। आज भी बहते रक्त के धब्बे दिखाई पड़ते है। कहाँ जाता है कि अंग्रेजों ने खून के धब्बे की जाँच की और प्रमाणित किया कि वह मानव रक्त ही है। संस्कृत में 'लेपे का अर्थ अंधा'' और 'अक्षि' माने 'आंखें'। पूरा अर्थ होता है - ''अंधा या विकृत आंखे' है। यही शब्द आगे चलकर लेपाक्षी पड़ा।

लेपाक्षी की स्थापत्य कला :

लेपाक्षी मंदिर की वास्तुकला विजयनगर स्थापत्य शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। मंदिर का निर्माण जिस चट्टान पर हुआ है वह कछुए के आकार का है। इसलिए इस पहाड़ी को 'कूर्मशैलम'' कहा जाता है। पत्थर के चट्टानों को काटकर इस मंदिर का निर्माण बनाया गया है। इस भव्य मंदिर के दो प्राकार है। सबसे बाहरी दीवार वाले प्राकार में तीन द्वार हैं। मुख्य मंदिर तीन भागों में विभाजित है - सभा मंटप जिसे मुख मंटपम या नाट्य मंटपम या रंग मंटपम के नामों से जाना जाता है; दूसरा अर्थ मंटपम या अंतराल; तीसरा गर्भगृह।

मंदिर के प्रवेश द्वार पर गोपुर है। मंदिर में प्रवेश करते ही, पत्थर की दीवारों और स्तंभों पर रामायण, महाभारत और पुराणों की कालजयी रंगीन भित्तिचित्रों की वैभवता दिखाई पडती है। यहाँ का हर स्तंभ एक-एक कहानी को बताता है। लेपाक्षी मंदिर की स्थापत्य कला हमें एक अलग ही दुनिया में ले जाती है।

नाट्य मंडपम के स्तंभों पर देवी-देवताओं और अन्य दिव्य कलाकारों की आदमकद मूर्तियाँ हैं। दिव्य संगीत वाद्य बजाते हुए ब्रह्म, नारद और अन्य कलाकार तथा नृत्य करती अप्सराएँ, तांडव नृत्य करते शिव को देखकर मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। अर्थ मंडपम की छत की शोभा बढ़ाती है

भगवान वीरभद्र की एक सुंदर भित्तिचित्र, जो भारत का सबसे बड़ा भित्तिचित्र है।

मंदिर के गर्भगृह में मुख्य देवता वीरभद्र पीठासीन हैं, जो आदमकद, चार भुजाओं वाले एक भयंकर योद्धा के रूप में दर्शन देते है, जिनके हाथ में अस्त्र-शस्त्र और एक खोपड़ी है। यहाँ इनके अलावा दुर्गा, विष्णु, पापेनाशेश्वर, लक्ष्मी, गणेश की मूर्तियाँ हैं। यहाँ भगवान श्रीराम से स्थापित रामलिंगेश्वर तथा पास में हनुमान जी से स्थापित हनुम लिंग है।

लेपाक्षी मंदिर की विशेषताएँ :

लटकता स्तंभ :

मंदिर का एक और विस्मयकारी आकर्षण ''लटकता हुआ स्तंभ'' है। स्तंभ के आधार और ज़मीन के बीच एक खाली जगह है जिससे कपड़ा और कागज़ आसानी से गुज़र सकते हैं, क्योंकि स्तंभ थोड़ा सा उखड़ा हुआ है और सिर्फ एक तरफ़ से ज़मीन को छूता है। यह शिल्पकारों की निपुणता का साक्षात् प्रमाण है।

कहा जाता कि 1902 ई. में एक ब्रिटिश इंजीनियर ने मंदिर के लटकते स्तंभ के रहस्य को सुलझाने का प्रयत्न करवाया। परिणाम यह हुआ कि तकरीबन 25 फीट दूरी पर स्थित खंभों पर दरारें आ गईं। इससे यह पता चला कि मंदिर का सारा वजन इसी विस्मयकारी खंभे पर टिका है।

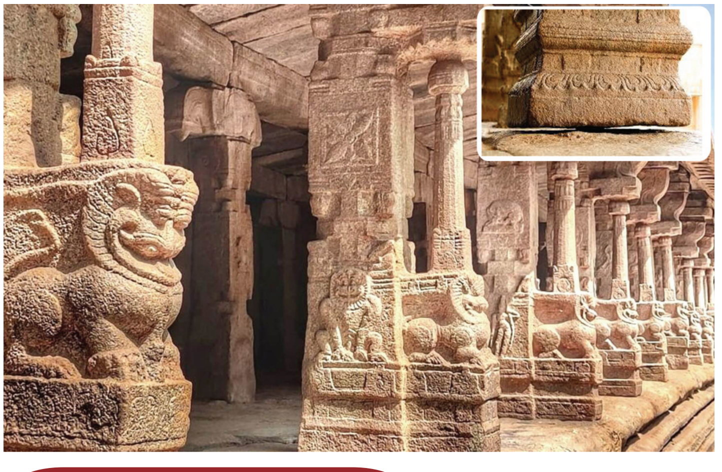

पैर का निशान :

लेपाक्षी में बहुत बड़े पैर का निशान है जो पत्थर के फर्श पर बना है। यह पाद चिह्न लगभग 3 फीट लंबा है। कोई इस को सीता माता का मानते हैं तो और कोई हनुमान जी का मानते हैं। इस चिह्न पर हमेशा पानी रहता है। इस पानी का रहस्यमय स्त्रोत अभी तक नहीं पता चला है।

अधूरा कल्याण मंटपम :

मंदिर के पिछले भाग में खुली हवा में विभिन्न लताओं के चित्र वाले सुंदर लता मंटपम तथा अनेक स्तंभों वाले अर्ध निर्मित कल्याण मंटपम है। कल्याण मंटपम के स्तंभों पर भगवान शिव और पार्वती के दैवीय विवाह कथा की उत्कृष्ट और सुंदर नक्काशी है। 38 स्तंभों पर विविध प्रकार के लिए अलग-अलग देवी देवताओं, नर्तकों, वाद्यकों और पौराणिक कथाओं के दृश्य हैं। जब विरूपण्णा अंधा हो गये तो यह कल्याण मंटपम भी अधूरा रह गया। विरूपण्णा का सुंदर सपना भी पूर्ण न होकर अधूरा ही रह गया।

अनोखा शिवलिंग :

लेपाक्षी मंदिर के पिछले हिस्से में एक अद्भुत शिवलिंग है जो एक विशालकाय, तीन कुंडल और

सात फन वाले नाग के ऊपर स्थित है। यह सर्प शिव के गले में आभूषण के रूप में नहीं है; परंतु भगवान विष्णु के शेषनाग जैसा दिखाई पड़ता है। शिल्पकार यह दिखाना चाहते थे कि हरि और हर में कोई भेदभाव नहीं है। लिंग के सामने नंदी को मंदिर के बाहर 500 मीटर दूरी पर बनाया गया।

अखंड नंदी :

मंदिर परिसर के बाहर, लगभग पाँच सौ मीटर दूर सड़क के किनारे लेपाक्षी नंदी स्थित हैं। यह एक विशाल मूर्ति है, जिसे भारत में सबसे बड़ी नंदी मूर्तियों में से एक माना जाता है। शिल्पकारों ने नंदी को बनाने के लिए चट्टान के एक ही टुकड़े का उपयोग किया है। यह नंदी श्री वीरभद्र मंदिर में स्थित नाग लिंग की ओर देखते हैं। नाजूक ढंग से गढ़ी गई सुंदर घंटी का हार नंदी की सुंदरता को दुगना करती है।

लेपाक्षी मंदिर का समय और पूजा :

लेपाक्षी मंदिर सुबह 5.00 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक फिर सायं 4.00 बजे से रात 8.30 बजे तक खुला रहता है। मंदिर में वीरभद्र की मूर्ति के लिए विभिन्न पूजाएँ और अनुष्ठान किए जाते हैं। उत्सवों और त्योहारों पर विशेष पूजाएँ होती है।

लेपाक्षी मंदिर के उत्सव और त्योहार :

महाशिवरात्रि :

महाशिवरात्रि लेपाक्षी मंदिर में मनाया जाने वाला एक प्रमुख त्योहार है। इस दौरान मंदिर को विशेष रूप से सजाया जाता है और खास पूजाएँ तथा वैभवपूर्ण शोभा यात्रा का आयोजन होता हैं। महाशिवरात्रि के दिन श्रद्धालु भक्तों की भारी भीड़ होती हैं।

कार्तिक पूर्णिमा :

कार्तिक मास की पूर्णिमा पर यह त्योहार मनाया जाता है। भक्त भगवान शिव की पूजा करते हैं। मंदिर में विशेष होम का आयोजित किए जाते हैं।

दुर्गम्मा महोत्सव :

दुर्गम्मा महोत्सव हिंदू पंचांग के अनुसार भाद्रपद माह में चार दिनों तक मनाया जाता है। दुर्गा माँ की पूजा मुख्य रूप से देवी पार्वती के रूप में पूजी जाती हैं। संक्रांति, दीपावली, नवरात्रि और एकादशी लेपाक्षी मंदिर के अन्य प्रमुख त्योहार हैं जो बहुत भव्यता के साथ मनाए जाते हैं।

लेपाक्षी महोत्सव :

लेपाक्षी की कला और संस्कृति की विरासत को बढ़ावा देने के मुख्य उद्देश्य से लेपाक्षी मंदिर में आंध्र प्रदेश पर्यटन द्वारा हर साल दो दिवसीय लेपाक्षी महोत्सव आयोजित किया जाता है। इस उत्सव के समय लेपाक्षी में विभिन्न स्थानों पर सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता हैं।

इस मंदिर के दर्शन के बाद मन आनंद से पुलकित हो जाता हैं जो शब्दों में अवर्णनीय है। यह मंदिर विजयनगर साम्राज्य की एक मेरु संरचना है। यह मंदिर सांस्कृतिकता और आध्यात्मिकता का; विज्ञान और धार्मिक मान्यताओं के सम्मिश्रण का विलक्षण उदाहरण है, जिसे देखकर हर कोई आश्चर्य चकित हो जाता है।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

संख्या 123 में 6 दीप स्तंभों के देवदान का उल्लेख है। शायद यह मंदिर में रखने के लिए ही होगा।

संख्या 125 और संख्या 126 में एक आल्वार का उल्लेख दिखता है जिनका नाम मिट गया है। उनको हर दिन दूध के लिए गायों का दान मिला है। इस सेवा का कर्तव्य सभैयार ने लिया है। सभैयार ने ही इस का मूल्य भी पाया है। गायों का दान भी। वास्तव में उस समय श्री वेंकटेश्वर मंदिर में कोई आल्वार नहीं थे।

संख्या 127 कुलोत्तुंग चोल राजा के समय का है। उलगमुडैयाल उनकी राणी हैं। उस समय के मंदिर के आल्वार को भगवान के लिए क्षीर समर्पण का दायित्व देते हुए रानी ने देवदान की व्यवस्था की है (पंक्ति 3)। पंक्ति 2 में ''निन्र आल्वार'' कहा गया है। इस आधार से यह स्पष्ट विदित होता है कि संख्या 125 और संख्या 126 में उद्धृत समर्पण श्री वेंकटेश्वर भगवान के लिए ही है।

संख्या 130 और संख्या 131 तिरुवेंकटमुडैयान को निरंतर ज्योति प्रज्वलन के लिए गायों और बैल का देवदान, मूल्य 310 पणम् दिया गया। यह दाताओं से प्रदत्त है।

संख्या 132 में भगवान के लिए चार ज्योतियों का देवदान प्रस्तावित है। संख्या 133, 135 और 135 भी ज्योति प्रज्वलन के लिए ही प्रावधानों की सूचनाएँ देते हैं। संख्या 142 और संख्या 143 दो दीपों की सूचना देते हैं। साथ साथ दीप स्तंभ भी हैं। यह किसी राजा के 22वें राज्य वर्ष में संपन्न किया गया है। संख्या 169 तो 32 गायों, एक बैल और एक दीप स्तंभ (कलश) की सूचना देता है।

संख्या 150 चेरनैवेन्रान द्वारा एक मंटप के निर्माण की सूचना देता है। ये तंबिरान्मार में एक को यह सेवा कर्तव्य दिया गया है। ये ''विण्णप्पम्'' सेवा अर्पित करने के लिए है। (तदर्थ अनुमति पाने की बात भी इसमें है)।

संख्या 151, 152, 153 और 154 में 400 पणम् देवदान से अन्नप्रसादों के समर्पण की व्यवस्था सूचित होती है (संख्या 152) और (संख्या 154 में) 2000 ''कुली'' भूमि दान भी तदर्थ है। (संख्या 155) ''मुदल-संधि'', प्रथम अन्नप्रसाद की बात सूचित करता है। यह अविट्टम (धनिष्ठा) नक्षत्र के दिन पर अन्नप्रसाद के लिए और नंदाविलक्कु (अनवरत ज्योति) के लिए भी है। संख्या 166 तो तिरुप्पोनकम् (पोंगलि) प्रसादम के लिए प्रावधान की सूचना देता है।

संख्या 167 और संख्या 168 तो पुष्पवनों और अन्नप्रसाद को सूचित करते हैं। संख्या 168 तो कोदै-तिरुणाल् (ग्रीष्मकालीन उत्सव) के लिए प्रावधानों की सूचना देता है।

तिरुचानूर मंदिर से हमें 16 खंडित अंश (परिलेख) मिलते हैं। उन में संख्या 118, 119, 120 और 137 में नयी मूर्ति के रूप में स्थापित ''तिरुविलन्कोइल-पेरुमाल-अड़िगल'' से संबन्धित प्रावधानों की सूचना हैं। इनमें अन्नप्रसाद से संबन्धित कुछ ''कलंजु'' (स्वर्ण मुद्रा) का भी उल्लेख है (संख्या 118)। शोलनाडु से प्राप्त कुछ भूदान का उल्लेख भी (संख्या 119) है। संख्या 120 में ब्राह्मणों के लिए अन्नदानार्थ 10 पोण हैं। यह ''तिरुवुण्णालिकैपुरम्'' से संबद्ध भूदान है (संख्या 137)। यह मूलविराट के भोग के लिए।

संख्या 121 के अनुसार एक प्रावधान की सूचना मिलती है। उसके अनुसार यह प्रावधान अन्नप्रसाद समर्पण के लिए है। किन्तु ये किसी कारण से तब तक निश्चित प्रावधानों से संपूर्ति नहीं होने पर उपयोग के लिए हैं। तदर्थ कुछ सोना और करों से प्राप्त धन को निक्षेपित किया गया है। इसकी आपूर्ति भी कर से की जानी चाहिए। संख्या 127, 128 और 129 एम्पेरुमान - अडियार जो 18 नाडु से थे, वैष्णवों के संरक्षण के लिए निर्देशित हैं। दाताओं ने 40 कलंजु स्वर्ण हर एक के लिए दान में दिया है। यह तिरुवेंकटेश्वर के लिए है। संख्या 139 निशादप्पडि, दैनिक समर्पण के लिए है। स्वर्ण निक्षेपण की आमदनी से होना चाहिए। संख्या 140 में 100 कलंजु सुवर्ण के समर्पण की सूचना मिलती है।

इससे तिरुच्चोकुनूर के सभैयार ने धान की खेत खरीद रखी है जिसकी आमदनी से सूचित कार्य संपन्न करना होता है। संख्या 141 एक ज्योति की सूचना देता है। संख्या 170 तिरुवेंकटम् उडैयान के अन्नप्रसाद समर्पण के लिए है। 10 तूंबु (80 सेर माप) चावल और अन्य वस्तुओं (घी, तरकारी, दाल, नमक, दही, सुपारी, पान, चंदन और दीप के लिए तेल आदि) के लिए हैं जो भगवान के लिए होती हैं। संख्या 146 में 80 वट्टि (पुट्टि) धान के भगवान के लिए प्रावधान की सूचना है। यह भी सुपारी, पान आदि के साथ मूर्ति के शरीर पर मलने के लिए सुगंधित तेल के लिए भी निवेदित है। संख्या 144 तो गोविंदपेरुमाल और नारायण, तिरुविलनकोइल और अलगिय पेरुमाल आदि का नाम लेता है और श्रीभंडारम् के लिए कुछ धन समर्पण का भी उल्लेख करता है। यहाँ उल्लेखित नारायण तिरुपति में स्थापित यादव नारायण मूर्ति हो सकता है। इस भगवान के लिए ही तिरुवेंकटनाथ यादवराय ने अन्नप्रसादार्थ देवदान दिया है। अलगिय-पेरुमाल तिरुचानूर के भगवान हैं। वे ही सुंदरराजस्वामी हैं।

संख्या 171, 172, 173 और 175 खंडित अवस्था में प्राप्त हैं। उनमें उडैयवर, रामानुज, आनंताल्वान, वेंकटत्तुरैवार (आनंताल्वान के पौत्र), आनंताल्वानपिल्लै वेंकटत्तुरैवार के नाम हैं। ये तिरुपति के आचार्य पुरुषों में हैं। इसमें समर्पण और पुष्प वाटिका का भी उल्लेख है। आनंताल्वान तो श्री रामानुजाचार्य के प्रिय शिष्य माने जाते हैं। उन्होंने अपने को श्री वेंकटेश्वर की सेवा के लिए अर्पित कर लिया है और वे तिरुमल पर स्थिर निवासी बनकर रह रहे थे। इन्होंने ही आल्वार सरोवर (आल्वार तालाब) को खुदवाया है। यह तिरुमल पर उत्तर की दिशा में है। इनके पौत्र वेंकटत्तुरैवार ने ही (संख्या 171) उस देवदान को स्वीकार किया है। इस के अंतर्गत अन्नप्रसाद, फूलमालाओं से अलंकरण और सुगंध लेपन आदि है और श्री रामानुज या अन्य से स्थापित अनुदान हैं (संख्या 171 और संख्या 172)।

इसी के अंतर्गत रामानुजन तिरुनंदनवनम् वाटिका का संरक्षण भी शामिल है (संख्या 175)। आनंताल्वान तिरुपति के आचार्य पुरुषों में एक हैं। रामानुज की मृत्यु के समय (सन् 1137-38 ई.) वेंकटत्तुरैवार शायद युवावस्था के होंगे। उन्होंने रामानुज की मूर्ति की स्थापना तिरुमल पर की हो तो वह सन् 12वीं सदी के तृतीय चतुर्थांश में ही हुआ होगा। फिर संख्या - 79-डी. में रामानुज का उल्लेख, एम्पेरुमानार एवं सौम्य वर्ष (1248-49 ई.) के अनुदान का उनको समर्पण और अन्य सेवाओं के लिए आदि का उल्लेख है।

संख्या 176 एक छोटा और संपूर्ण परिलेख है। इसमें तिरुपति और अवुलालि (अविलाल गाँव) के बीच की सीमाओं का निर्धारण है। अविलाल गाँव, तिरुपति नगर के दक्षिण में है। इसकी सीमा तिरुपति की नैऋति दिशा में स्थित पेरिय-एरि से निर्धारित है। वहाँ एक सीमा की स्थिति से संबन्धित पत्थर का स्थापन भी किया गया है। यह ''जीयर - कुलि'' तिरुपति की पश्चिम दिशा में हैं।

संख्या 177 अलिपिरि (अड़िपड़ि) के पेरियाल्वार मूर्ति से संबन्धित है। यह तिरुमल जाने के लिए सीढियाँ जहाँ से आरंभ होती है, वहाँ पर स्थित है। उस परिलेख से ज्ञात होता है कि कामविल्ली ने एक तालाब खुदवाकर सर्पगिरि अप्पन (शेषाद्रीश्वर) को अर्पित किया है। शेषाद्रीश्वर शेषशैल पर वास करनेवाले श्री वेंकटेश्वर भगवान ही हैं। उसे कामविल्ली ने अपनी माता के नाम पर बनवाया है। कामविल्ली को उनकी माता ने ही इस प्रकार के अनुदान के 32 लाभों को बताया था।

संख्या 10 और संख्या 11 (जिल्द I के) यह सूचित करते हैं कि पल्लव राजा कुमार सर्वज्ञ - खड्ग-मल्ल, कोप्पेरुंजिंगा या महाराजसिंह को, जिन्होंने शेन्दमंगलम् (दक्षिण आर्काट जिला) पर राज किया है, राजराज चोल-III के आह्वान पर आये (सन् 1216 ई.) माना जाता है। इनमें उनको काटक-कुल-तिलक, कांची नायक, कविसार्वभौम, सहोदर-सुंदर (जतावर्मन सुंदर पाण्ड्य - I के भाई), कर्नाट - लक्ष्मी - लुंटाक (कर्नाटक या होयसल राज्य, मैसूर में द्वारसमुद्र की संपत्ति और यश को लूटनेवाला), गणपति - अट्ट - वीर - पद - मुद्र (वरंगल के काकतीयगणपति देव के पैरों के आभरण पहननेवाला) और अन्य उपाधियों से लसित बताया गया है। मंदिर की किसी सेवा से इनके संबन्ध का उल्लेख नहीं मिलता है। ये एक अत्याशी और शक्तिशाली सामंत थे। चोल सम्राट के विरुद्ध विद्रोह किया भी था। उनको हटाकर बन्दी बनाया। कर्नाटक के राजा, जो चोल राजा के साले थे, ने चोल सम्राट की रक्षाकर, स्वतंत्र बनाकर उन्हें पुनः सिंहासन पर अधिष्ठित कराया है। वे तंजाऊर से राज्य करने लगे। (पृ.17-19 जिल्द I और पृ.101-103 और 115-116 देवस्थानम् परिलेख रिपोर्ट)। उनसे संबन्धित सूचना श्रीशैलम् से प्राप्त अभिलेख, जो संस्कृत श्लोक में से मिलती है। ये राजा लगभग सन् 1225 ई. से 1272-73 ई. तक शासन करते रहे हैं।

क्रमशः

श्री प्रपन्नामृतम्

(61वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

श्री रामानुजाचार्य का वैभव (2)

प्राचीन समय कांचीपुरी में एक श्रीवैष्णव ब्राह्मण के यहाँ एक बालक ने जन्म लिया, जो कि जन्म से ही मूक था। कुछ वर्षों बाद वाणीहीन होने के कारण वह कांची गूंगा के ही नाम से प्रसिद्ध हो गया। कुछ बड़ा होने पर वह गूंगा बालक एक दिन अकस्मात् ही कहीं चला गया। माता-पिता ने खोजने का प्रयत्न किया लेकिन कुछ पता नहीं लग सका। इस घटना के दो वर्ष बाद एक दिन कांचीपुरी निवासियों के आश्चर्य का कोई पार नहीं रहा जबकि वह गूंगा बालक अकस्मात् प्रकट हो गया, और अब वह गूंगा न रहकर एकदम स्पष्ट और सुन्दर भाषण करने वाला बन गया था। नगरवासियों ने जब उससे इतने समय कहाँ रहे और यह वाणी सिद्धि कैसे प्राप्त हो गयी इसके बारे में पूछा तो उसने बताया कि- ''मैं क्षीरसागर में भगवान श्री विष्णु के समीप चला गया था। जहाँ मैंने भगवान श्री विष्णु एवं माता लक्ष्मी के दर्शन किये, और इस समय मैं वही से वापस आ रहा हूँ।'' यह आश्चर्यजनक बात सुनकर लोगों को और भी अधिक विस्मय हुआ और उन्होंने फिर से पूछा कि-तुम क्षीरसागर से भगवान के दर्शन कर वापस आ रहे हो तो वहाँ के समाचार हम से कहो। नगरवासियों के वचनों को सुनकर वह पूर्वमूक बोला कि- ''जगन्नाथ! श्री विष्वक्सेन भगवान संसार रक्षण के लिये पृथ्वी पर भूतपुरी में श्री रामानुजाचार्य के रूप में अवतरित हुये हैं।'' ऐसा कहकर वह बालक फिर अकस्मात् अन्तर्ध्यान हो गया इसके बाद वह बालक फिर कभी नहीं दिखलाई पड़ा। इससे यह प्रमाणित हो गया कि यतिराज श्री रामानुजाचार्य कोई सामान्य ज्ञानी नहीं अपितु वैकुण्ठ लोक के भगवद्अंश विशिष्ट महापुरुष है, जिन्होंने भगवान के आदेश से इस भूतल पर लोकरक्षण के लिये अवतार ग्रहण किया था।

ऐसे हि श्री यतिराज के विद्यार्थी जीवन में जब उनके द्वारा ब्रह्मराक्षस की मृत्यु का प्रसंग आया था।

तब उस ब्रह्मराक्षस ने उनके विद्या गुरु यादवप्रकाश को सम्बोधित करके कहा था कि- ''इस तुम्हारे शिष्य श्री रामानुजाचार्य ने लीला करने के लिये मनुष्य शरीर धारण किया है। वास्तव में अप्राकृत है। भगवान

श्रीमन्नारायण के आदेश से लोकरक्षा के लिये इस भूतल पर अवतरित हुए है। इसके आश्रय के द्वारा तुमको भी वैकुण्ठ की प्राप्ति होगी।''

श्री आन्ध्रपूर्ण स्वामीजी ने भी सभी वैष्णवों से यही कहा था कि- ''संसार में जो आचार्य का पद है वह यतिराज श्री रामानुजाचार्य में सुप्रतिष्ठित है। उनके चरण कमलों के आश्रय के बिना दूसरा कोई भी मोक्ष का उपाय दृष्टिगत नहीं होता है। अतः समस्त जीवों के रक्षक श्री यतिराज के चरण कमल ही है।'' इस प्रकार से उस समय के सभी आचार्य विद्वानों ने और यतिराज के अवतार से पूर्व ही अनेकों महात्माओं ने उनके भगवत् अंश विशिष्ट महापुरुष होने के बारे में अपने विचार प्रकट कर एवं भविष्यवाणी कर यतिराज का वैभव बढ़ाया था।

उस समय में कृष्णग्राम के अधिपति श्रीबालक स्वामी के नाम से प्रसिद्ध एक विद्वान महात्मा थे। वे सर्वशास्त्र तत्वज्ञ एवं श्रीवैष्णव सम्प्रदाय में एकनिष्ठा थे। एक समय वे सचैल (वस्त्रों सहित) स्नान करके और चंदन आदि के द्वारा अंगों को दिव्य बनाकर श्रीवैष्णवों की सभी में गये और वहाँ पर उन्होंने उपस्थित सभी श्रीवैष्णवों से कहा कि- ''विद्वानों के लिये भी कल्याणकारी पदों की प्राप्ति के लिये यतिराज श्री रामानुजाचार्य के चरण कमलों के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है। फिर मूर्खों के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या है?'' पहले तत्त्व वेत्ता श्री देवराज मुनि ने यतिराज के आदेश से अनन्तादि आचार्यों को पंचसंस्कार विधि से सुसंस्कृत करते हुये शिष्य बनाकर ऐसा वाक्य कहा था कि- ''जिस प्रकार गाँव की टिटिहरी (पक्षी) की गर्दन में ताल का वजनदार फल बाँध दिया जाता है, वैसे ही इस समय यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने मेरे द्वारा यह कार्य कराया है। अर्थात मैं इस कार्य को करने के योग्य नहीं हूँ, फिर भी उन्होंने यह कार्य मुझे सुपुर्द किया है। अतः लोग यम भलीभाँति समझ लें कि हम लोगों के एकमात्र रक्षक श्री यतिराज के चरण कमल हैं।''

श्री पुत्रपुत्राचार्य के नाम से प्रसिद्ध श्री कूरेशाचार्य स्वामी के एक शिष्य थे, जो नित्यप्रति श्रीवैष्णवों की निन्दा करते थे। श्रीरंगम् निवासी सभी लोग महात्मा कूरेशाचार्य के शिष्य इस श्रीवैष्णव निन्दक को देखकर प्रायः यही चर्चा करते थे कि इसमें इनका दोष न होकर समस्त दोष के भागी श्री कूरेशाचार्य जी ही हैं। जिन्होंने इनके इस दूषण को नहीं मिटाया। शिष्यवत्सल कूरेशाचार्य जी लोगों के मुख से उक्त वचन को सुनकर अत्यन्त दुःखित हुए एवं किसी पुण्य काल में जबकि वे पुत्रपुत्राचार्य तर्पण करने के लिये हाथ में जल, तिल, कुशा आदि लेकर आसन पर बैठे संकल्प बोलने की तैयारी कर रहे थे, तो महात्मा कूरेशाचार्यजी ने उनसे मन, वचन और कर्म तीनों का संकल्पपूर्वक दान ले लिया। शिष्य ने भी भक्तिपूर्वक अपने गुरु को करणत्रय का दान कर दिया।

इसके बाद निश्चेष्ट होकर गुरुदेव के चरण कमलों का ध्यान करते हुये अपने गृह में ही निवास करने लगे। एक दिन वे अपने घर से बाहर निकल कर वीथि में आये और वहाँ श्रीवैष्णवों को देखकर उसके दोषों पर मन ही मन में विचार करने लगे। परदोष निरूपण मग्न पुत्रपुत्राचार्य स्वामी के मन में अकस्मात् विवेक जागृत हुआ, और उन्होंने विचार किया कि- मैंने तो अपने मन, कर्म, वचन यह तीनों गुरुदेव को संकल्पपूर्वक दान कर दिये है। अब इस प्रकार परदोष निरूपण करना, गुरुदेव की वस्तु का अपहरण एवं पाप है, यह अवश्य ही उनकी वस्तु की चोरी करना है। इसके परिणाम स्वरूप निश्चय ही मुझे नरक की प्राप्ति होगी।

अतः अब आगे इस शरीर के द्वारा मन, कर्म, वाणी से किसी भी प्राणी का किंचित भी अपकार न होने पावे, इसके लिये इस शरीर का ही त्याग कर देना चाहिये। ऐसा निश्चय करके उन्होंने पृथ्वी पर कुशासन बिछाकर अन्न-जल छोड़ शरीर त्यागने का निश्चय किया। यह समाचार जब उनके गुरु श्री कूरेशाचार्य स्वामी ने सुना तो वे शिष्य की प्राण रक्षा के लिए तत्काल वहाँ पर आये और कुशासन पर पड़े हुए शिष्य को समझाते हुए कहा कि- ''हे वत्स! तुम देह का त्याग क्यों कर रहे हो, मैं तुम्हारा दान में दिया हुआ मन वापस कर रहा हूँ। अब तुम मानसिक कार्यों पूर्ण स्वतंत्र हो गये हो। इसलिये उठो और शरीर त्याग करने वाले विचार का परित्याग कर दो। अब तुम परनिन्दा करने वाले वचनों को त्यागकर भक्तिभाव के साथ यतिराज के चरणारविन्दों का स्मरण करो। जो मनुष्य वाणी एवं शरीर के द्वारा पाप करते है उन्हें राजा दण्ड अवश्य ही देता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। यदि प्रमादवश तुमसे कोई मानसिक पाप हो गया हो तो वह श्री यतिराज के चरणारविन्दों के स्मरण मात्र से शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा। ऐसा उपदेश देकर कूरेशाचार्यजी ने अपने शिष्य को समझाकर उन्हें सन्मार्ग की और अग्रसर किया।''

किसी पुण्काल के विशिष्ट सुअवसर पर कावेरी नदी के पुण्य तट पर विद्वान् श्रीवैष्णवों का एक विशाल सम्मेलन हुआ। जिसमें मोक्ष साधन पर विचार विमर्श के समय में द्वितीय वेदव्यास के ही समान श्री कूरेशाचार्यजी ने उठकर वस्त्रों सहित कावेरी नदी में स्नान कर भुजाओं को ऊपर करके समस्त श्रीवैष्णवों को सम्बोधित कर कहा कि- ''यह बात सर्वथा सत्य है कि समस्त संसार के उद्धारक यतिराज श्री रामानुजाचार्य ही हैं। इसमें कोई भी सन्देह नहीं है।''

एक बार श्री मरीचाचार्य स्वामीजी दाशरथी स्वामी से शास्त्रार्थ करने आये। उन दोनों ने निर्णय किया कि विजयी को पराजित शास्त्रार्थी अपने कन्धों पर बैठा करके नगर यात्रा करेगा। और फिर उस शास्त्रार्थ में श्री दाशरथी जीत गये। जब मरीचाचार्य ने श्री दाशरथी स्वामी को अपने कन्धों पर उठाकर श्रीरंगम् की प्रदक्षिण पूरी की, तब मरीचाचार्यजी ने उपदेश की याचना की। श्री दाशरथी स्वामी तत्काल उन्हें श्री यतिराज के पास ले जाकर प्रणामादि करवाने के बाद में समस्त वृत्तान्त कहते हुए उन्हें श्रीवैष्णव बनाकर यह कल्याणकारी उपदेश दिया कि- ''तुम्हें हमारे गुरुवर्य यतिराज श्री रामानुजाचार्य के चरणकमलों की शरण में जाना चाहिये।''

एक बार श्री लोकाचार्य नामक एक प्रसिद्ध श्रीवैष्णव ने श्री गोविन्दाचार्य स्वामी को देखकर यह कहा था

कि- ''मैं भगवद्विषय के अर्थों का जानकार तथा समस्त शास्त्रों का प्रवक्ता हूँ।''

तत्वज्ञ श्री गोविन्दाचार्य ने शास्त्र सम्मत उपदेश देते हुये श्री पराशर भट्टार्य से कहा कि- ''मैं मोक्ष के प्रधान साधन भूत कल्याणकारी वचन कहूँगा। आप ऐसा अभिमान न करें कि मैं कुलवान, धनवान, विद्वान सकल शास्त्र पारीण होने के साथ-साथ श्री कूरेशाचार्य का पुत्र हूँ और भगवान श्रीरंगनाथ ने मुझे पुत्रवत स्वीकार किया है। किन्तु विद्या, धन और कुलीनता के अभिमान को छोड़कर श्री यतिराज को अपना रक्षक मानते हुये उनके चरण कमलों में जीवन निर्वाह करें, क्योंकि वे ही मोक्षदायी हैं।''

एकबार श्री कूरेशाचार्य के पुत्र श्री पाराशर भट्टार्य ने वेदान्ती स्वामी से कहा कि- ''तुम्हारे हितार्थ में मैं कहाता हूँ कि- मैंने रंगनाथ के पुत्र भट्टार्य का आश्रय ग्रहण किया है, और मैंने गुरुदेव की सेवार्थ गुरुदक्षिणा के रूप में विपुल द्रव्य आदि दिये हैं, ऐसा मानकर अपने को कृतार्थ न मानना चाहिये। अपितु श्री रामानुजाचार्य के दिव्य चरण कमलों को ही मुख्य मानकर जीवन यापन करना चाहिये।''

एक समय श्री रामऋतुनाथाचार्य ने श्री कूरेश स्वामी की सन्निधि में प्रेमपूर्वक श्रीभाष्य का तीन बार अध्ययन कर गाँव जाते समय गुरुदेव से हाथ जोड़कर विनीत भाव से पूछा कि- ''मुझे वह ज्ञान और भक्ति कृपया प्रदान करें जिससे कि मोक्ष का मार्ग अत्यन्त ही सुगम हो जाय।'' इस पर सन्तुष्ट होकर गुरुदेव ने उनसे कहा कि- ''तुम्हें प्रभाकर आदि समस्त मीमांसा शास्त्रों के अध्ययन से विद्वत्ता प्राप्त हुई है। किन्तु इस तरह का अहंकार करते हुये यतिराज श्री रामानुजाचार्य के चरण कमलों की सेवा करो, मोक्ष का अन्य कोई उपाय नहीं।''

एक बार श्री नारायणपुर के व्यास भट्ट नामक श्रीवैष्णव विद्वान् श्री योगिराज की सन्निधि में अपने शिष्यों को श्रीभाष्य का अध्ययन करा रहे थे, इस वृत्तान्त को सुनकर श्रीवैष्णवों ने विस्मित होकर श्री भट्टार्य स्वामी से कहा कि यह श्रीभाष्य गंगा की धाराओं के समान गम्भीर और दुस्तर है। श्रीभाष्य के अर्थों का ज्ञान हमारे लिये दुर्लभ है। हमारी प्रसन्नता के लिये कोई सुगम उपाय बतायें। तब बुद्धिसागर भट्टार्य ने श्री रामानुजाचार्य के चरणारबिन्दों की शरण में जाने का उपदेश दिया।

एक समय श्री वरदाचार्य ने व्याख्यान देते हुए श्रीभाष्य का तात्पर्य श्रीवैष्णवों को समझाया यह तत्वार्थ सुनकर श्रीवैष्णवों ने भक्तिमार्ग के इस गुरुत्तर उपाय की उपेक्षा कोई सुगम उपाय बताने की प्रार्थना की। जिससे अल्पज्ञों और अनाधिकारियों के लिये परमपद सुगमता से प्राप्त हो जाय। तब उन्होंने प्रपत्ति मार्ग बताया। फिर वह मार्ग भी उनके लिये अगम्य ही था। अन्ततोगत्वा उन्होंने कहा कि- ''भवसागर के तारनहार यतिराज श्री रामानुजाचार्य के चरणारबिन्दों की सेवा करते हुए उनकी शुभ कथाओं को पढ़ते और सुनते हुए सर्वरूपेण उन्हीं की भक्ति करके आप मोक्ष को प्राप्त कर सकेंगे।''

कुल 74 शिष्यों ने प्रधानतः श्री यतिराज के वैभवों का प्रकाश किया। वे सभी भाग्यशाली हैं शिष्यों द्वारा प्रकाशित वैभव सम्पन्न जगद्गुरु यतिराज श्री रामानुजाचार्य इस प्रकार श्रीरंगम् में सुशोभित हुये। विद्वानों के प्राणस्वरूप निखिल वेदान्त के सारभूत महान् तत्वार्थ को जानकर जो श्री यतिराज की भक्ति करते हैं, वे निःसन्देह वैकुण्ठ को प्राप्त करते हैं।

।। श्री प्रपन्नामृत का 61वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

“चालदा हरिनाम सौख्यामृतमु
तमकु चालदा हितवैन”

संकीर्तन का हिंदी अनुवाद

क्या यह हरि नाम जप सुखामृत
पर्याप्त नहीं?
क्या इस हरि नाम जप से
होनेवाला हित पर्याप्त नहीं?
क्या यह अकेला हरि नाम जप
बहुत कुछ नहीं?
नाना जन्मों के कैद से मुक्त करने
क्या यह पर्याप्त नहीं?
मन में अकेला हरि नाम मंत्र
पर्याप्त नहीं?
दस हजार नरक के कूपों से
बचाने यह पर्याप्त नहीं?
हरि नाम अकेला कनकाद्रि सा
पर्याप्त नहीं?

जन्म जन्म के दारिद्रय दोष को दूर करने यह पर्याप्त?
यह हरि नाम बुद्धि-दीप पर्याप्त नहीं?
कठिनाति कठिन तिमिर को भगाने?
क्या वेंकटेश का कीर्तन अकेला पर्याप्त नहीं?
जगत में अनेक कल्पों में गर्व के साथ जीने?
सुंदर इस प्रभु के दासों की करुणा पर्याप्त नहीं?
सदा हंस-मुख आनंद देनेवाले रूप दर्शन करना क्या
पर्याप्त नहीं?

भावार्थ :

माना जाता है कि हरि से भी हरि नाम जप का महत्व है। हरि नाम जप सारे दोषों को और सारे कष्टों को दूर करनेवाला होता है। अन्नमय्या ने इस संकीर्तन में हरि नाम जप के महत्व पर प्रकाश डाला है। अन्नमय्या हरि के भक्तों से सवाल कर बैठते हैं कि हरि नाम के जप से जो सुख प्राप्त होता है। क्या वह किसी अमृत पान से कम है? अमृत पान से कोई अमर बनता है। हरि नाम के जप से भी लोग अमर बन जाते हैं। ऐसे में हरि नाम का जप करना चाहिए। हरि के भक्तों से अन्नमय्या सवाल करते हैं कि अमृत पान से जो कुछ हित होता है वह हित हरि नाम जप से भी होता है। ऐसे में हरि नाम जप करना क्या पर्याप्त नहीं है? अन्नमय्या का विचार है कि कलियुग में लोगों को अमृत पान करने का अवसर नहीं मिलता है। इसलिए उन्हें अवश्य हरि नाम का जप करके अमृत पान करने जैसा सुख प्राप्त कर लेना चाहिए।

अन्नमय्या आगे कहते हैं कि हरि नाम जप अकेला क्या पर्याप्त नहीं है? क्यों कि हरि नाम जप मात्र से जन्म राहित्य हो जाता है। यानी अनेक योनियों में बार बार जन्म लेने के कैद से कोई मुक्त हो सकता है। ऐसे ही कलियुग में लोगों को हरि नाम जप करना चाहिए।

मन में हरि नाम जप करना ऐसा मंत्र है जो दस हजार नरक के कूपों में गिरने से बचा देता है। यानी हरि नाम के जप को मंत्र के रूप में जप कर के कोई नरक से तथा नरक में प्राप्त होनेवाले कष्टों एवं बाधाओं से मुक्ति पा सकता है।

अन्नमय्या का विचार है कि हरि नाम का जप कनकाद्री को प्राप्त करने जैसा है। कनकाद्री का मतलब सोने का पहाड है। जिस के पास सोना रहता है। वह गरीब कैसे बन सकता है। यानी हरि नाम जप मात्र से सारी संपदाएँ प्राप्त होती हैं। जिससे अपनी दरिद्रता हमेशा के लिए दूर हो जाती है। हरि नाम जप सिर्फ संपदाएँ नहीं देता है। बल्कि हरि नाम जप दीप जैसा है। जो सदा प्रकाश को फैलाता है। हरि नाम जप वैसी बुद्धि प्रदान करता है जिससे कलि कल्मष से प्राप्त होनेवाले अंधकार को भगया जा सकता है।

हरि का ही रूप धारी श्री वेंकटेश के एक कीर्तन करना अकेला क्या पर्याप्त नहीं है। क्यों कि इस कीर्तन से इस जगत में तथा अनेक कल्पों तक गर्व के साथ जिया जा सकता है। इतने सुंदर स्वामी श्री वेंकटेश्वर के दासों की करुणा प्राप्त करना क्या पर्याप्त नहीं है? सदा हंसमुख वाले उस सुंदर विग्रह के दर्शन से अपने सारे कष्टों को दूर करने सदा आनंद के साथ जीने के लिए पर्याप्त नहीं है? अन्नमय्या का विचार है कि श्री वेंकटेश्वर के दर्शन से तथा हरि नाम के कीर्तन से लौकिक और अलौकिक सारे सुख प्राप्त हो जाते हैं। हरि नाम जप इस रूप में अमृत पान से भी बढ कर है। इसलिए अन्नमय्या हरि भक्तों से सवाल करते हैं कि हरि नाम के जप से प्राप्त होनेवाला सुख क्या किसी अमृत पान से कम है?

शिवपंचाक्षर स्तोत्र

नागेंद्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्मांगरागाय महेश्वराय,
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय
तस्मै 'न' काराय नमशिवाय। 1

मंदाकिनीसलिल चंदन चिर्चिताय
नंदीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय,
मंदारपुष्प बहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमशिवाय। 2

शिवाय गौरीवदनाब्ज बृंद
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय,
श्रीनीलकंठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमशिवाय। 3

वसिष्ठ कुंभोद्भव गौतमादि
मौनींद्र देवार्चित शेखराय,
चंद्रार्क वैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमशिवाय। 4

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाक हस्ताय सनातनाय,
दिव्याय देवाय दिगंबराय
तस्मै 'य' काराय नमशिवाय। 5

पंचाक्षर मिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ,
शिवलोक मवाप्नोति शिवेन सह मोदते। 6

इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचित शिवपंचाक्षर स्तोत्रम् संपूर्णम्।

शिवाष्टकम्

तस्मै नमः परमकारणकारणाय
दीपोज्ज्वल ज्वलित पिंगल लोचनाय,
नागेंद्र हार कृत कुंडल भूषणाय
ब्रह्मेंद्र विष्णु वरदाय नमश्शिवाय। 1

श्रीमत्प्रसन्न शशिपन्नग भूषणाय
शैलेंद्रजा वदन चुंबितलोचनाय,
कैलास मंदर महेंद्र निकेतनाय
लोकत्रयार्ति हरणाय नमश्शिवाय। 2

पद्मावदात मणिकुंडल गोवृषाय
कृष्णागरुप्रचुर चंदन चर्चिताय,
भस्मानुषक्त विकचोत्पल मल्लिकाय
नीलाब्जकंठ सदृशाय नमश्शिवाय। 3

लंबत् सपिंगल जटा यकुटोत्कटाय
दंष्ट्राकराल विकटोत्कट भैरवाय,
व्याघ्राजिनांबरधराय मनोहराय
त्रैलोक्यनाथ नमिताय नमश्शिवाय। 4

दक्षप्रजापति महामख नाशनाय
क्षिप्रं महात्रिपुर दानव घातनाय,
ब्रह्मोर्जितोर्ध्वग करोटि निकृंतनाय
योगाय योगनमिताय नमश्शिवाय। 5

संसार सृष्टि घटना परिवर्तनाय
रक्षः पिशाच गणसिद्ध समाकुलाय,
सिद्धोरग ग्रह गणेंद्र निषेविताय
शार्दूलचर्मवसनाय नमश्शिवाय। 6

भस्मांगराग कृतरूप मनोहराय
सौम्यावदात वनमाश्रित माश्रिताय,
गौरीकटाक्ष नयनार्ध निरीक्षणाय
गोक्षीर धार धवलाय नमश्शिवाय। 7

आदित्य सोम वरुणानिल सेविताय
यज्ञाग्निहोत्र वरधूम निकेतनाय,
ऋक्सामवेदमुनिभिः स्तुतिसंयुताय
गोपाय गोपनमिताय नमश्शिवाय। 8

शिवाष्टक मिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ,
शिवलोक मवाप्नोति शिवेन सह मोदते। 9

इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं
शिवाष्टकम् संपूर्णम्।

विश्वनाथाष्टकम्

गंगातरंग रमणीय जटाकलापम्
गौरी नीरंतर विभूषित वामभागम्,
नारायणप्रिय मनंगमदापहारं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्। 1

वाचामगोचर मनेकगुणस्वरूपं
वागीश विष्णु सुरसेवित पादपीठम्,
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवंतं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्। 2

भूताधिपं भुजगभूषण भूषितांगं
व्याघ्राजिनांबरधरं जटिलं त्रिनेत्रम्,
पशांकुशाभय वरप्रद शूलपाणिं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्। 3

शीतांशुशोभित किरीट विराजमानं
फालेक्षणानल विशोषित पंचबाणम्,
नागाधिपारचित भासुर कर्णपूरं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्। 4

पंचाननं दुरितमत्तमतंगजानां
नागान्तकं दनुजपुंगवपन्नगानाम्।
दावानलं मरणशोकजराटवीनां
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्। 5

तेजोमयं सगुणनिर्गुण मद्वितीयं
आनंदकंद मपराजित मप्रमेयम्
नागात्मकं सकलनिष्कल मात्मरूपं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्। 6

रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं
वैराग्य शांतिनिलयं गिरिजासहायम्,
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्। 7

आशां विहाय परिहृत्य परस्यनिंदां
पापे रतिं च सुनिवार्य मनस्समाधौ,
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्। 8

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य
व्याख्यात मष्टक मिदं पठते मनुष्यः,
विद्यां श्रियं विपुल सौख्य मनन्तकीर्तिं
संप्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्। 9

विश्वनाथाष्टक मिदं यः पठेत् शिवसन्निधौ,
शिवलोक मवाप्नोति शिवेन सह मोदते।

दि.30-12-2025 को तिरुमल में वैकुंठ एकादशी के संदर्भ में माड़ावीथियों में स्वर्णरथ पर भगवान जी भक्तों को दर्शन दिया। इस संदर्भ में चक्रस्नान को संपन्न किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. ई.ओ. श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस., और ति.ति.दे. अतिरिक्त ई.ओ. श्री सी.एच.वेंकय्या चौदरी, आई.आर.एस., ने भाग लिया। ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित सुविधाओं के बारे में भक्तों से बातचीत करते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायूडू।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

6. पांडिय नाट्टु तिरुप्पतिगल
(पाण्डिय देश के दिव्य क्षेत्र)

89. तिरुक्कुरुङ्कुडि (वामन क्षेत्र)

तिरुनेल्वेली (चेन्नै - तिरुनेल्वेली - कन्याकुमारी रेल मार्ग) से बस से जा सकते हैं - (लगभग 37 कि.मी.) सब स्थानों से बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - निन्ड्र नंबि। दूसरा नाम : कुरुङ्कुडि नंबि, इरुन्द नंबि, वडुकनंबि, वैष्णव नंबि, तिरुप्पार्कडल नंबि, मलै मेल नंबि आदि नाम हैं। पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सवमूर्ति - अलहिय नंबि, नवरात्रि के समय (उला) अलहिय नंबि का शोभा-यात्रा की प्राचीन परंपरा है।

तायार (माताजी) - कुरुङ्कुडि वल्लि नाच्चियार, यहाँ दो तायार सन्निधियाँ हैं।

तीर्थ - तिरुपारकडल्, पञ्चतुरै, सिन्धु नदी।

विमान - पंचकेतक विमान।

प्रत्यक्ष - शिवपिरान।

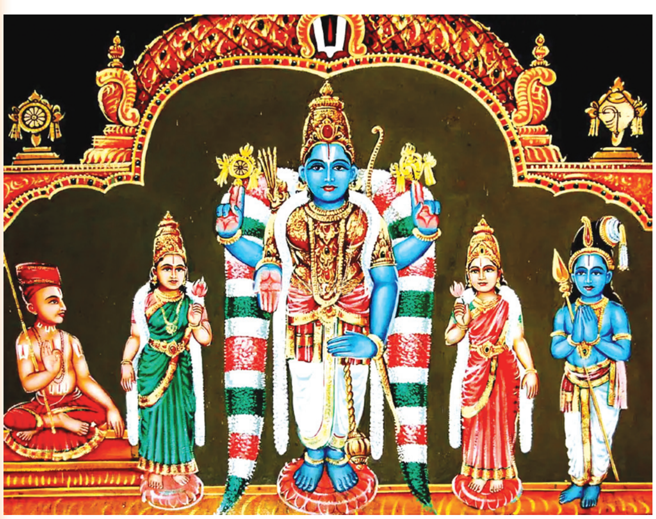

तायार (उत्सवमूर्ति) उत्सवमूर्ति के साथ एकासन में विराजमान हैं। निण्ड्र नंबि, किडन्द नंबि की सन्निधि के बीच शिवन सन्निधि। महेन्द्र गिरि नाथ भी है। इरुन्द नंबि सन्निधि में विराजमान भगवान वैकुण्ठ नाथ नाम से प्रचलित हैं। यहाँ मणवाल मामुनि सन्निधि भी है। इस मंदिर के एक कि.मी. दूरी पर तिरुप्पार्कडल नामक नाले के किनारे तिरुप्पार्कडल नंबि सन्निधि है। यहाँ से लगभग 9 कि.मी. दूरी पर एक छोटी पहाडी पर मलै-मेल नंबि सन्निधि है।

इस क्षेत्र के एक कि.मी. दूरी पर तिरुप्पार्कडल नदी के बीच 'तिरुवट्ट पारै नामक-पारै-(पत्थर) पर उडैयवर (रामानुज की सन्निधि हैं।) यहाँ ऐतीह्य है कि भगवान ने रामानुज से 'तिरुमंत्रार्थ' का उपदेश प्राप्त किया। इसलिए वैष्णव नंबि भी प्रचलित है।

गाँव के बाहर खेतों के भीच तिरुमंगै आल्वार 'तिरुवरशु' नामक एक छोटा सा मंदिर है। वराह पुराण में एक भक्त 'नम्पाडुवान' का विवरण है एक कैशिक द्वादशी के दिन नम्पाडुवान नामक भक्त ने अपने पुण्य के एक भाग को ब्रह्मराक्षस को दिया, जो उन्हें मारकर रवाने आया था। इस प्रचार उन्होंने इस क्षेत्र की रक्षा की आजकल की कैशिक एकादशी के दिन इस घटने का नाटक के रूप में प्रदर्शन होता हैं। यह भी ऐतीह है कि यमलोक यहाँ से बहुत निकट कूप्पिडु-दूर पर (बुलाने पर सुनाई पडने की दूर) है।

स्थल पुराण से विदित होता है कि वामनावतार के वक्त जब आकाश को नापा तब उनके नूपर से शिलंबारु (शिलंबु-नूपुर) की उत्पत्ति हुई। यहाँ भी कुरता आदि पहनकर जाने की अनुमति नहीं है। पुकळेंदि पुलकर एवं ओट्टकूत्तर ने भगवान का गुण गान किया है।

यहीं पर तिरुमंगै आल्वार ने परमपद की प्राप्त की। उनकी एक सन्निधि है।

मंगलाशासन - चार आल्वार, 40 दिव्य पद।

90. तिरुच्चिशिरीवर मंगै - नांगुनेरी (तिरुच्शीवर मंगल नगर)

वानमामले - नांगुनेरी - तोताद्रि क्षेत्र तिरुनेल्वेली से बस से नांगुनेरी (तिरुच्चिरीवर मंगै) जा सकते हैं। रेल से भी जा सकते हैं। तिरुनेल्वेली से लगभग 20 कि.मी. पर है। वानमामलै होकर ही तिरुक्कुरुङ्कुडि जाना है। वानमामलै जीयर मठ है।

मूलमूर्ति - तोताद्रिनाथ - (तोताद्रि - वानमामलै) पूर्वाभिमुखी - आसीनस्थ दर्शन देते हैं।

उत्सवर - देयवनायकन।

तायार (माताजी) - दोनों ओर उभयनाच्चियार-शिरीर वरमंगै तायार की दो सन्निधियाँ हैं।

तीर्थ - इन्द्र तीर्थ, चेट्टुत्तामरै तीर्थ।

विमान - नन्दवर्धन विमान-श्रीवैकुण्ठ विमान।

प्रत्यक्ष - ब्रह्म, इन्द्र, रोमशर, भृगु, मारकण्डेय।

विशेष - यह स्वयं-व्यक्त क्षेत्र है। भगवान को प्रतिदिन तेल से अभिषेक किया जाता है। इस तेल को लोक (एक कुल में 25 फुट लंबाई 15 फुट चौडाई) जमाकर देते हैं। इस प्रयोग से सभी बीमारियाँ दूर होती हैं। यहाँ की शठारी में श्री शठकोपन की मूर्ति है। यह क्षेत्र वानमामलै का केन्द्र स्थान है। यहाँ ऐतीह्य है - यहाँ भगवान वैकुंठ की तरह-वैकुंठ विमान में श्रीदेवी, भूदेवी सहित दर्शन देते हैं। ऊर्वशी, तिलोत्तमा दोनों भगवान के दोनों ओर चँवर की सेवा करती हैं।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 11 दिव्य पद।

91. तिरुवैकुण्ठम् - (श्री वैकुण्ठम्)

यहाँ से नौ मंदिर नव तिरुपति नाम से प्रसिद्ध है यह आल्वार नव तिरुपति है। क्षेत्र 1 सं 98 यह क्षेत्र तिरुचेन्दूर। तिरुनेल्वेली रेल-मार्ग में है। लगभग 25 कि.मी. है बस

की सुविधा है। बस से जाना ज्यादा सुविधाजनक है। मंदिर के पास उतर सकते है। (स्टेशन से 3 कि.मी. पर है)

मूलवर - श्रीवैकुण्ठ नाथन, कळ्ळरप्पिरान। पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - वैकुण्ठवल्लि, भूदेवी तायार की अलग सन्निधियाँ है।

तीर्थ - भृगुतीर्थ, ताम्र पर्णी नदी।

विमान - चन्द्र विमान।

प्रत्यक्ष - भृगु चक्रवर्ति, इन्द्र, यहाँ भगवान के (खडे दर्शन) आदिशेष छत्र लेकर उनकी सेवा में हैं।

मंगलाशासन - नम्माल्वार, 2 दिव्य पद।

92. तिरुवरगुण मंगै (नत्तम्)

(यह आल्वार नव तिरुपति में दूसरा क्षेत्र है) तिरुनेल्वेली - श्रीवैकुंठम - कन्याकुमारी रेल मार्ग में श्रीवैकुण्ठ से तीन कि.मी. पर है। बस से जाना सुविधा जनक है। यहाँ यह 'नत्तम' नाम से प्रचलित है।

मूलमूर्ति - विजयासनपेरुमाल - पूर्वाभिमुखी - आसीनस्थ दर्शन देते हैं। - आदिशेष छत्र।

तायार (माताजी) - वरगुणवल्लितायार, वरगुणमंगैतायार, उभय नाच्चियार।

तीर्थ - अग्नि तीर्थः, देव पुष्करिणी।

विमान - विजय कोटि विमान।

प्रत्यक्ष - अग्नि, रोमश मुनि, सत्यवान।

विशेष - यह ऐतीह्य है वेदवित् नामक ब्राह्मण ने यहाँ विष्णु भगवान का अनुग्रह प्राप्त करने तपस्या की। जब भगवान ने प्रत्यक्ष दर्शन दिए उस वक्त उनकी प्रार्थना के अनुसार विजयासेनर नाम।

मंगलाशासन - एक आल्वार, एक दिव्य पद।

93. तिरुप्पुळिङ्कुडि (आल्वार नव तिरुप्पति-3)

वरगुण मंगै (क्षेत्र सं 91, 92) से लगभग एक कि.मी. श्रीवैकुण्ठ से 20 कि.मी.।

मूलमूर्ति - कायृचिन वेन्दन। पूर्वाभिमुखी भुजंगशयन्।

तायार (माताजी) - मलर्महल नाच्चियार, भूमहल नाच्चियार, पुलिंकुडिवल्लि - उत्सवमूर्ति।

तीर्थ - वरुण तीर्थः निर् मति तीर्थ।

विमान - वेदसार विमान।

प्रत्यक्ष - वरुण, निर्मति धर्मराज, नरर्, बाहर से एक खिडकी के द्वारा चरणों के दर्शन करते हैं। यहाँ इन्द्र को ब्रह्महत्या शाप से निवृत्ति/मुक्ति मिली।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 12 दिव्य पद।

क्रमशः

माघ मास का महत्व

- श्री अवधेश कुमार शर्मा

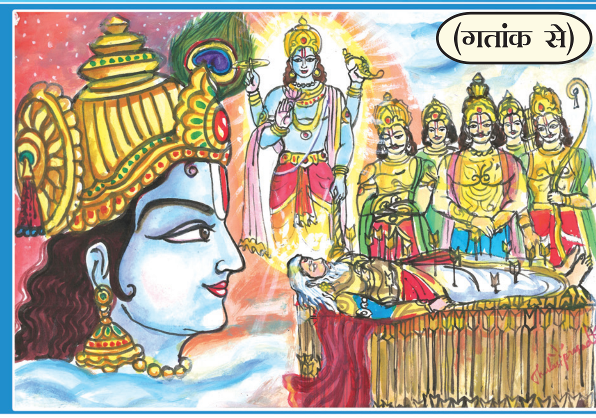

6. माघ मास के आध्यात्मिक, सामाजिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी लाभ

आध्यात्मिक लाभ

पाप-क्षेर (पापों का नाश), आत्म-शुद्धि, साधना के प्रति दृढ़ता, पितृसन्तोष तथा मोक्षप्राप्ति के मार्ग में सहायता।

सामाजिक लाभ

गरीबों में दान और सहयोग की भावना; समुदाय में मिलकर तीर्थयात्रा, मेला और सेवा-कार्य का आयोजन; विद्या-स्नेह (वसंत पंचमी) के कारण शिक्षात्मक उत्सव।

स्वास्थ्य लाभ

अनुशासित दिनचर्या, संयमित आहार, स्नान और व्यायाम से शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य में सुधार। तिल एवं गुड़ के सेवन से ऊर्जा और तत्परता में वृद्धि होती है - (परन्तु चिकित्सीय सलाह के आधार पर)।

7. सावधानियाँ और अनुशंसाएँ (व्यवहारिक दिशानिर्देश)

1. अंधविश्वास से बचें : शास्त्रीय परम्पराएँ सतर्क विवेक के साथ अपनाएँ; अंधविश्वास/हठधर्मिता से परहेज़ करें।

2. स्थानीय पंचांग का पालन : तिथि-विशेष, संक्रान्ति एवं मुहूर्त के लिए अपने क्षेत्रीय पंडित/पंचांग देखें- क्योंकि ग्रह-नक्षत्र तथा तिथियाँ क्षेत्र और वर्ष अनुसार बदलती हैं।

3. स्वास्थ्य का ध्यान : उपवास/अन्य कठोर नियम अपनाने से पहले चिकित्सकीय स्थिति का ध्यान रखें- विशेषकर गर्भावस्था, वृद्धावस्था या दीर्घरोग में।

4. पर्यावरणीय संवेदना : तीर्थ यात्रा/स्नान के समय साफ़-सफ़ाई और पर्यावरण की रक्षा का ध्यान रखें- नदी/तट को स्वच्छ रखें।

5. इमानदार दान : दान करते समय पारदर्शिता रखें - दिए हुए दान का उद्देश्य स्पष्ट रखें और साक्ष्य बनाकर रखें यदि जरूरत हो।

8. सारात्मक

माघ मास हिन्दू धर्म में तप, दान, स्नान और पितृकर्मों का महत्त्वपूर्ण काल है। शास्त्र माघ में की गयी धार्मिक ऊर्जा (साधना, दान, संस्कार) को अत्यधिक फलप्रद मानते हैं। यह मास व्यक्तिगत शुद्धि के साथ-साथ सामाजिक सेवा एवं सामुदायिक धार्मिक जीवन को भी सुदृढ़ बनाता है। इस मास को शास्त्रविधि और विवेक दोनों के साथ मनाने पर दीर्घकालिक आध्यात्मिक और सामाजिक लाभ होते हैं।

9. पुराण में माघ माह का महत्व

1) पद्मपुराण में माघ-मास

अ) माघ-स्नान का महत्व

श्लोक - पद्मपुराण, उत्तरखंड, 67.39

'माघे मासि कृतं स्नानं सर्वतीर्थफलप्रदम्।'

अर्थ : माघ मास में किया गया स्नान सभी तीर्थों में स्नान करने के बराबर फल देने वाला होता है।

आ) तिल-स्नान और पाप-क्षय

श्लोक - पद्मपुराण, उत्तरखंड, 67.41

'तैलाभ्यक्तो नरो नित्यं माघस्नानं समाचरेत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते।।'

अर्थ : जो मनुष्य माघ मास में तिल के तेल का अभ्यंग करके नित्य स्नान करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर विष्णु लोक को जाता है।

2) नारदपुराण में माघ-मास

नारदपुराण, पूर्वार्ध, 60.27

'माघे च स्नानमात्रेण नारायणसमिपगतिः।'

अर्थ : माघ मास में केवल स्नान करने से भी नारायण के समीप जाने का मार्ग प्राप्त होता है।

3) स्कन्दपुराण में माघ-मास के बारे में

अ) माघ-स्नान

स्कन्दपुराण, वैष्णवखंड 20.5

'माघमासे जलस्नानं सर्वयज्ञफलप्रदम्'

अर्थ : माघ मास में जल-स्नान सभी यज्ञों के फल के समान माना जाता है।

आ) माघ में तिल-दान

स्कन्दपुराण, नागरखण्ड 222.53

'तिलदानं च यो दद्याद् माघे मासि नरः सदा।
अनन्तफलमाप्नोति पितृणां तर्पणार्थकम्।।'

अर्थ : जो मनुष्य माघ मास में तिल का दान करता है, वह अनन्त फल पाकर पितरों को तृप्त करता है।

4) गरुड़पुराण में माघ-दान और पुरुषार्थ-सिद्धि

गरुड़पुराण, पूर्व 118.6-7

'माघे मासि कृतं दानं सर्वदानोत्तमं स्मृतम्।
अक्षय्यं चैव तन्मन्ये सर्वपापहरं परम्।।'

अर्थ : माघ मास में किया गया दान सभी दानों में श्रेष्ठ माना गया है; यह अक्षय फल देने वाला और सभी पापों को नष्ट करने वाला है।

5) महाभारत में भीष्म-तिथि (माघ शुक्ल अष्टमी)

महाभारत, अनुशासनपर्व 167.26

'माघशुक्लाष्टमी पुण्या यां तु भीष्मो ययौ दिवम्'

अर्थ : माघ शुक्ल पक्ष की अष्टमी पवित्र तिथि है जिस दिन भीष्म पितामह दिव्य लोक को गए। इसलिए इन दिन पितृ-तर्पण और दान का विशेष महत्व माना गया है।

6) मनुस्मृति में माघ-मास का उल्लेख

मनुस्मृति 4.88

'माघशुक्ले तु यो मासे स्नायादुदकगो रणे।
स प्रयाति परं स्थानं ब्रह्मणा सह मोदते।।'

अर्थ : जो पुरुष माघ शुक्ल मास में नदी/जल में स्नान करता है, वह परम लोक को प्राप्त होकर ब्रह्म के साथ सुख भोगता है।

7) ब्रह्मवैवर्तपुराण में माघ मास

ब्रह्मवैवर्तपुराण, कृष्णजन्मखण्ड 74.10

'माघस्नानं हि यत्पुण्यं न लभ्यं पर्वकोटिषु।'

अर्थ : माघ-स्नान का जो पुण्य है, वह करोड़ों पर्वों में भी प्राप्त नहीं होता।

8) भागवतपुराण में माघ-स्नान का संकेत

भागवत में प्रत्यक्ष "माघस्नान" शब्द कम आता है परन्तु "माघ पुण्य" और "स्नान-दान" का महत्व अन्य संदर्भों में दिया गया है।

भागवत 11.18.14 (स्नान-दान-व्रत मार्गदर्शन)

'स्नानं दानं तपो जपः... धर्मस्य साधनम्।'

अर्थ : स्नान, दान, तप और जप - ये धर्म के साधन हैं। (माघ में इन्हीं चारों को सर्वोच्च माना गया है।)

9) माघ मास में नियम-शास्त्रीय प्रमाण

अ) तिल का प्रयोग

पद्मपुराण, उत्तर 67.4 (संक्षेप)

'माघे तिलैः स्नानदानहवनानि विधीयते।'

अर्थ : माघ मास में स्नान, दान और हवन-तीनों में तिल का प्रयोग अनिवार्य माना गया है।

आ) ब्रह्मचर्य व संयम

मनुस्मृति 6.92

'ब्रह्मचर्यं समास्थाय शुचिर्भुत्वा यथाविधि।'

अर्थ : मनुष्य को इस मास में ब्रह्मचर्य का पालन और शुचिता बनाए रखनी चाहिए।

10. माघ मास - कर्तव्य (शास्त्रानुसार)

कर्तव्य 1 - प्रातःस्नान

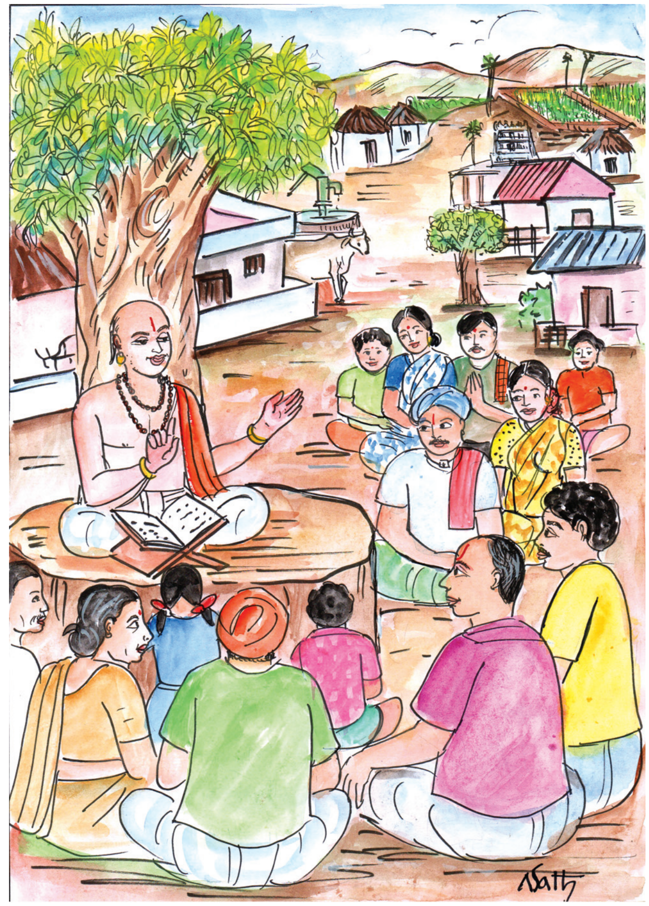

प्रमाण : पद्मपुराण, मनुस्मृति, स्कन्दपुराण।

कर्तव्य 2 - सूर्य अर्घ्य

यजुर्वेद मंत्र : 'ॐ घृणिः सूर्याय नमः।'

कर्तव्य 3 - तिल-दान व तिल-हवन

प्रमाण : स्कन्दपुराण, पद्मपुराण।

कर्तव्य 4 - जप-ध्यान (विशेषतः विष्णु-स्मरण)

विष्णु सहस्रनाम का निर्देश - महाभारत अनु.149

कर्तव्य 5 - ब्रह्मचर्य, संयम, सत्संग

प्रमाण : मनुस्मृति 6.92

कर्तव्य 6 - पितृ-तर्पण (विशेष तिथियों पर)

प्रमाण : महाभारत (भीष्म अष्टमी), गरुड़पुराण।

(समाप्त)

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

तर्क्क च्चमणरुम् शाक्किय प्पेय्हळुम्, ताळ्शडैयोन्
शोर्क्कट्र् शोम्बरुम् शूनिय वादरुम्, नान्मरैयुम्
निर्क्क क्कुरुम्बुशेय् नीचरुम् माण्डनर् नील् नीलत्ते
पोर्क्कर्प्पकम्, एम्मिरामानुज मुनि पोन्दपिन्ने ॥९९॥

अर्थिकल्पस्य भगवतो रामानुजस्यात्र भूमाववतरणेन, कौतस्कुताः क्षपणाः मूर्खा श्शाक्या शेवागमनिष्ठा राजसाश्शैवाः शून्यवादनिरताः चतुर्ष्वपि वेदेष्वपार्थान् वितन्वानाः कुदृशश्च व्यनश्यन्।

इस विशाल पृथ्वीतल पर श्रेष्ठ कल्पवृक्ष के सदृश परमोदार श्री रामानुज स्वामीजी का अवतार होने के बाद, शुष्कतर्क करने वाले क्षपणक, मूर्ख शाक्य, शैवागम के अभ्यासी राजस शैव, शून्यवादी और चारों वेदों का अपार्थ करनेवाले, ये सभी नष्ट हो गये।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल में निषेधित कार्य।

- तिरुमल में धूम्रपान, शराब, मांसाहार आदि निषेधित हैं।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें। भिखमंगों का प्रोत्साहन न करें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- अन्य मतों का प्रचार न करें। पशु, पक्षी का वध निषेधित है।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल, राजकीय पार्टीयों का झंडा व चिह्न, अन्य मतों का चिह्न, प्रमुख व्यक्तियों का छायाचित्र आदि सप्तगिरियों पर प्रदर्शित करना निषेधित है।
- तिरुमल में जुआ, पासा आदि को खेलना या अन्य खेलों में धन को बाजी लगाना निषेधित है।
- प्लास्टिक ब्याग, कवर्स, बोतिल और तत्संबंधित चीजों को संपूर्ण रूप से निषेधित है।

ईश्वर ही हमारा सच्चा साथी है

- श्री गजानन पाण्डेय

दुःख में हम ईश्वर के करीब होते हैं। उस पल हम उसे बार-बार याद करते हैं, मुख से नाम-स्मरण होता है। जब चारों तरफ विपरीत परिस्थितियाँ हो, अपने भी हमसे परायों सा व्यवहार करें। निंदा, अपमान, प्रताड़ना व अपशब्दों का वार हमें भीतर तक तोड़ देता है - तब हमें लगता है कि 'ईश्वर ही केवल हमारे हैं।' इस असार संसार में कोई अपना है तो वह है परमपिता परमात्मा। ईश्वर ही हमारे सच्चे मित्र, सखा व मार्गदर्शक हैं। वे जब किसी को एक बार अपना लेते हैं, तो हमारा, वे सदा ख्याल रखते हैं और हमें भी उसकी प्रतीति होती है - ऐसा लगता है वह हमारे एकदम निकट है। परंतु दुःख में ही हम उसे याद क्यों करते हैं? जब वह हम पर सुख की वर्षा करता है, हमें वह सब देता है, जिसकी हम आस लगाये होते हैं - परंतु हम इतने कृतघ्न है कि 'उसकी देन, निस्वार्थ भाव से दी गई सौगात के लिए उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना भूल जाते हैं।'

जबकि हर सुबह सूरज - हमारे लिए नये अवसर लेकर आता है। वसंत ऋतु पर वृक्षों पर नयी कोयल ऊग आती है। होली पर उमंग व उत्साह में हम सराबोर हो जाते हैं। ऐसा लगता है, प्रकृति नृत्य कर रही है। हमें उसके सान्निध्य में अपूर्व आनंद की अनुभूति होती है।

उस क्षण, हमें यह तनिक भी एहसास नहीं होता कि 'यह किसने दिया है। इस संसार को चलानेवाला वह परमात्मा ही तो है।' अतः उस दुःख में जब हम उसे अपने भीतर महसूस करते हैं तो दूसरे क्षण - उसे क्यों भूल जाते हैं?

उस घड़ी में, जब हमारी अपने दोषों पर नज़र पड़ती है या आत्म-विश्लेषण की घड़ी में हमें जो आध्यात्मिक अनुभूति होती है - उसका एहसास भी तो हमें वही दिलाता है।

इस रूप में, दुःख हमारा सच्चा मित्र है, जो हमें ईश्वर से जोड़ता है।

इस संदर्भ में, मेरी कविता 'एहसास' की निम्नलिखित पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

एहसास -

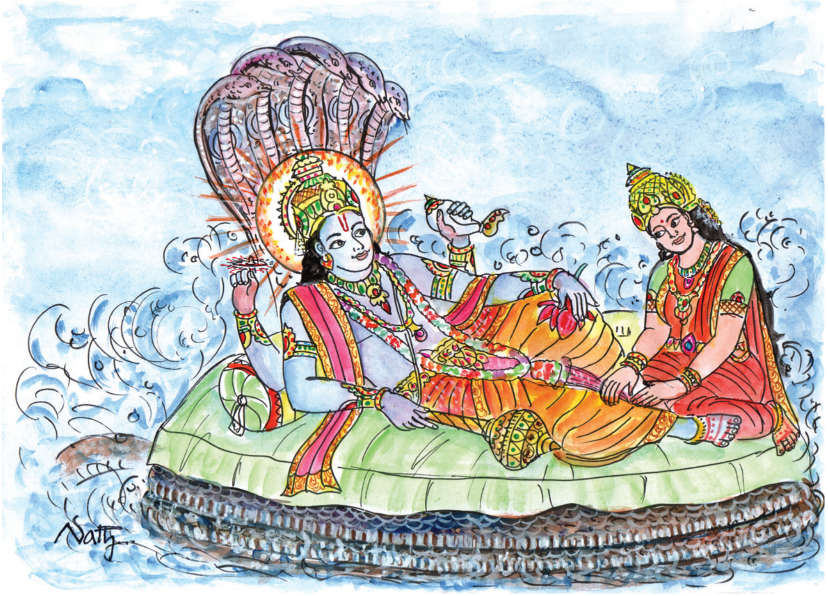

सुख से तो
दुःख है अच्छा
याद दिलाए
हर पल उसकी।
जब थाम लेते हैं
हम उसके हाथ
और छोड़ देते हैं, अपने को
उसके सहारे।
तब खेता है, वह हमारी नैया
और हमें एहसास होता है
कि वह यहीं कहीं है।

इस भक्ति के एहसास में आकंठ डूबकर, 'मीरा' को मारने के लिए दिया गया जहर भी अमृत हो गया। 'सबरी' ने प्रभु 'राम' को भाव-विभोर होकर जूठे बेर सिलाए। जन्मांध 'सूरदास' के हृदय में 'श्रीकृष्ण' का वास होता था और वे (श्रीकृष्ण) उनकी भक्ति से रीझ कर, उनके साथ खेला करते थे। 'सूरदास' की भक्ति की पराकाष्ठा के दर्शन हमें उनके ग्रंथ 'सूरसागर' में दिखायी देते हैं।

इससे यही सिद्ध होता है कि - 'ईश्वर ही हमारा सच्चा साथी है।'

अर्थात् उसकी शरणागति में ही जीवन का सुख निहित है। उसके साथ जुड़कर ही हमें परम शांति व सुख (आनंद) की प्रतीति होगी।

इसका संकेत, श्रीमद्भवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण की वाणी से स्वतः स्पष्ट है-

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

(गीता 18/66)

यानी संपूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तु शोक मत कर।

इसलिए यदि हम इस असार, क्षणभंगुर संसार के दुःखों से छुटकारा चाहते हैं तो हमें सदैव 'ईश्वर' में ध्यान लगाना होगा।

इस संबंध में कबीरदासजी की सरल वाणी में, यह बात और स्पष्ट हो जाती है -

दुःख में सब सुमिरन करै, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुःख काहे को होय।।

दिसंबर-2025 महीने का क्विज-41 के समाधान

1) वैकुंठ एकादशी, 2) स्वर्णरथ,

3) केशव, 4) कलियन्,

5) कुमुदवल्ली, 6) श्री वराहस्वामी,

7) महाभारत, 8) भगवान विष्णु,

9) भूमितीर्थ, 10) पुरुषोत्तम विमान,

11) गोस्वामी तुलसी दास,

12) श्री पादराज तीर्थ,

13) श्री गोदादेवी (आंडाल),

14) श्री वेंकटेश्वर स्वामी (बालाजी),

15) वकुलमाता.

यह विश्व एक अनोखी सृष्टि है। जमीन से आकाश की ओर दृष्टि दौडाने पर विनील आकाश, अन्तरिक्ष में प्रकाशवान ग्रह-नक्षत्रों का समाहार (समूह) दिखकर, आँखों को चकाचौंध करके मन में उत्साह भर देता है। सूर्योदय, चन्द्रोदय; उदयास्तमय सन्ध्याओं की अरुण किरणों; रातों में आकाश-वीथि में दीयों की भांति विकसित होने वाले तारा-तोरण... आश्चर्य के साथ कुतूहल पैदा करते हैं।

जगत् चक्र का चक्षु, सूर्य के साथ पृथ्वी पर बसने वाले हम लोगों का अविनाभाव संबंध है। वह भौतिक, प्राणिक, आत्मिक अनुबंध हमें चला रहा है, ऐसा तत्त्वदार्शनिक योगियों ने निरूपित किया। आज के परिशोधक उनकी सत्यासत्यता बहिर्गत करके निरूपित करने के लिए खोज कर रहे हैं। पृथ्वी भी एक ग्रह है। इसलिए उसका जीवन (अस्तित्व) अन्य ग्रहों के साथ जुड़कर रहना, उनके प्रभावों पर स्पन्दित होना अनिवार्य है। सारे ग्रहों का अधिपति सूर्य ग्रह है। वह ग्रह-शक्ति बाहर के प्रपंच को और हम में निहित प्रपंच को चला रही है। दिन में चंडशासन की तरह जलने वाला सूर्य, रात के समय चन्द्र के द्वारा शीतल रजनी फैलाता है। सूर्य आत्मकारक है। चन्द्र मनो (वि)कारक है। वृद्धि-क्षय चन्द्र के सहज लक्षण हैं। संकल्प, विकल्प मन के सहज गुण हैं। सूर्य की अपेक्षा चन्द्र के साथ ही हमारा सान्निहित्य अधिक है; ऐसा हमें गोचर होता है। चन्द्र में विरहाग्नि के रूप में विलसित हो सृष्टि का श्रीगणेश करने वाला सूर्य ही है।

हमने अपनी सुविधा के लिए काल को संवत्सर, मास, पक्ष, वार, दिन में विभाजित कर लिया। प्रत्येक मास के दो पक्ष होते हैं। प्रत्येक पक्ष की एक एकादशी को आध्यात्मिक चन्द्रोदय का प्रतीक मान सकते हैं। अनेकों नामों से एकादशी प्रजा के जीवन से जुडी हुई है। एक ओर स्मार्त, मध्व, वैष्णव संप्रदायों का परिरक्षण करती है तो दूसरी ओर मतत्रय-एकादशी के रूप में सामरस्यता को बनाये रखा है। मानव के शरीर में छः चक्र हैं; कुण्डलिनी योग-शक्ति के द्वारा मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा चक्रों को पार करने पर सहस्रार-अमृत-वृष्टि-साधना साध्य हो सकती है; ऐसा योग शास्त्र बताता है। शुक्ल चन्द्र, प्रथम पक्ष की एकादशी को अपना स्वस्थान आज्ञा-चक्र में; दूसरे पक्ष में कृष्णचन्द्र अपना वास-स्थान अनाहत चक्र में दूसरी एकादशी को पहुँचता है; वह समय, प्रशस्त समय है; आध्यात्मिक प्रगति की इच्छा पैदा करती है; ऐसी प्रतीति है।

आध्यात्मिक चन्द्रोदय

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

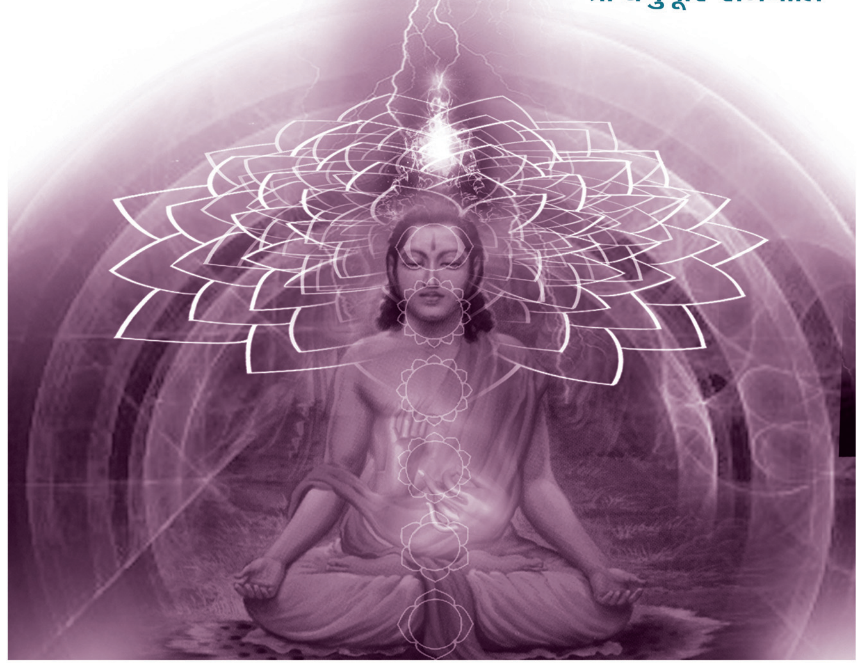

भृकुटियों के बीच, आज्ञा चक्र पर, हृदय में सुरक्षित रहने की भावना रखने वाले अनाहत चक्र पर, एकादशियों में मन को ध्यान-प्रक्रिया में लग्न (निमग्न) कर देना चाहिए। मन को वश में रखने वाला मानव महात्मा ही है। ध्यान-योगी, आज्ञाचक्र पर ध्यान, श्वास रखते योग-निद्रा में रहने पर भी, जागकर प्रज्ञावान की तरह ही रहता है। अनाहत चक्र में सुषुप्ता की अवस्था में निमग्न होने पर भी, वह योगी, हृदय के साथ लयात्मक ढंग से स्पन्दित होता ही रहता है।

उपवास रखने का मतलब जीव को प्रतिदिन, अपने परितापों से विमुक्त होकर अपने में स्थित आत्माराम की ओर दृष्टि दौडानी है। बाहर दिखायी देनेवाली प्रपंच से बढ़कर दूसरा एक और सुन्दर लोक है। वह अन्तर्दृष्टि से देखने पर ही दिखता है। मास के दो एकादशियाँ अन्तर्नेत्र-द्वय के समान हैं; ऐसा हम भावना कर सकते हैं। चन्द्र की तरह, दो एकादशियाँ याने आज्ञा और अनाहत-चक्रों की ध्यानोपासना ही चन्द्रोदय है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको अवश्य ध्यान रखें।

- तिरुमल-यात्रा के लिए निकलने के पूर्व अपने इष्ट अथवा कुलदेवता की प्रार्थना करें।
- भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्री स्वामिपुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।
- मंदिर के अंदर भगवान पर ही ध्यान केंद्रित करें।
- मंदिर के अंदर पूर्णतः मौन रहें तथा ''गोविंदा'' का उच्चारण करें।
- तिरुमल के पास स्थित पापविनाशनम्, आकाशगंगा पवित्र तीर्थों तथा अंजनाद्रि आंजनेय (हनुमान) मंदिर को दर्शन करें।
- तिरुमल में रहते समय हमारे रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहारों का पालन करें।
- अपनी भेंट हुंडी में ही डालें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों को मात्र ही उपयोग करें।

(आयुर्वेद)

मोरिंगा (सहजन / शिग्रु)

- डॉ.सुमा जोषि

मोरिंगा, जिसे हिंदी में **सहजन** तथा आयुर्वेद में **शिग्रु** कहा जाता है, एक बहुगुणी और औषधीय वृक्ष है। इसे ''चमत्कारी वृक्ष'' या ''ड्रमस्टिक ट्री'' भी कहा जाता है। इसके **पत्ते, फल, फूल, बीज, छाल और जड़** सभी औषधीय महत्व रखते हैं और पोषक तत्वों से भरपूर होने के कारण आधुनिक विज्ञान में इसे ''सुपरफ़ूड'' कहा जाता है। आयुर्वेद में शिग्रु का प्रयोग **वात-कफ दोष नाशक, शोथहर, दीपन-पाचन और शोधन कर्मों** में किया जाता है। वर्तमान समय में पोषण की कमी, मधुमेह, हृदय रोग और सूजन संबंधी विकारों में इसका महत्व और बढ़ गया है।

प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे **चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और अष्टांग हृदय** में शिग्रु को वात-कफ दोष नाशक, शूलहर, शोथहर, कृमिनाशक और वेदनास्थापक द्रव्य के रूप में वर्णित किया गया है। पौराणिक मान्यताओं में इसे घर के समीप लगाने से स्वास्थ्य और दीर्घायु प्राप्त होती मानी जाती थी। ऐतिहासिक रूप से इसका उपयोग भारत, मिस्र, यूनान और रोम में पोषण और औषधि दोनों के लिए होता रहा है। मिस्रवासियों ने इसके तेल का त्वचा संरक्षण और सौंदर्य के लिए उपयोग किया।

वनस्पति विवरण : Moringa oleifera Lam. मोरिंगेसी कुल का मध्यम आकार का, शीघ्र वृद्धि करने वाला पर्णपाती वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 8–12 मीटर तक होती है। तना नरम, भंगुर और धूसर रंग का, छाल मोटी और खुरदरी होती है। पत्तियाँ हल्के हरे, त्रिपत्रीय या बहुपत्रीय और अंडाकार होती हैं। फूल छोटे, सुगंधित, श्वेत या क्रीम रंग के, गुच्छों में लगते हैं। फल लंबी, पतली, त्रिकोणीय फली के रूप में 30–45 सेमी लंबी होती है। बीज गोलाकार और तीन पंखों वाले होते हैं। यह वृक्ष उष्ण एवं उपोष्ण जलवायु में अच्छी तरह विकसित होता है।

आयुर्वेदिक गुण : शिग्रु कटु-तिक्त रस, लघु, रूक्ष-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक वाला माना जाता है। यह वात-कफ दोष का शमन करता है, आम को नष्ट करता है और **दीपन-पाचन, शोथहर, शूलहर एवं कृमिनाशक** गुणों से युक्त है। इसलिए आमवात, शूल, गुल्म, शोथ और कफप्रधान विकारों में विशेष उपयोगी है, जबकि पित्त प्रकृति वालों में इसे सावधानी से प्रयोग करना चाहिए।

वर्गीकरण	आयुर्वेदिक वर्गीकरण
संस्कृत नाम : शिग्रु हिंदी नाम : सहजन अंग्रेजी नाम : Drumstick Tree / Moringa वानस्पतिक नाम : Moringa oleifera Lam. कुल (Family) : Moringaceae	चरक संहिता अनुसार : शूलप्रशमन द्रव्य सुश्रुत संहिता अनुसार : शिग्रु वर्ग भावप्रकाश निघण्टु : शिग्रु वर्ग कर्म के आधार पर : वात-कफ शामक द्रव्य

पर्यायवाची नाम	प्रादेशिक नाम
संस्कृत पर्याय	**प्रादेशिक नाम**
• शिग्रु • शिग्रुवृक्ष • बहुमूल • तीक्ष्णगन्ध • मोचक • शोभांजन	• **हिंदी** : सहजन • **कन्नड़** : नुग्गो • **तमिल** : मुरुंगै • **तेलुगु** : मुनगा • **मराठी** : शेवगा • **गुजराती** : सरगवा • **बंगाली** : सजिना • **मलयालम** : मुरिंगा

मोरिंगा की मुख्य प्रजातियाँ हैं, जिनमें Moringa oleifera सबसे अधिक प्रचलित और औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसे भारत में सहजन या शिग्रु कहा जाता है, और इसके पत्ते, फल, फूल, बीज तथा छाल औषधीय और पोषण दोनों के लिए उपयोगी हैं। आयुर्वेद में इसी प्रजाति का अधिक प्रयोग होता है। दूसरी प्रजाति, Moringa Concanensis, पश्चिमी घाट और कोंकण क्षेत्र में पाई जाती है, जिसे जंगली शिग्रु भी कहा जाता है। इसके औषधीय गुण M. oleifera के समान हैं, लेकिन उपयोग कम होता है। इसके अलावा विश्व के अन्य भागों में Moringa stenopetala, Moringa peregrina और Moringa drouhardii जैसी प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं, जो स्थानीय चिकित्सा और पोषण में उपयोग होती हैं, किंतु आयुर्वेदिक चिकित्सा में मुख्यतः M. oleifera को ही मान्यता प्राप्त है।

रासायनिक संघटन : मोरिंगा (शिग्रु) पोषक तत्वों एवं जैव-सक्रिय घटकों से भरपूर एक महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पति है। इसके पत्तों में प्रोटीन, आवश्यक अमीनो अम्ल, विटामिन A, C, E, B - कॉम्प्लेक्स तथा कैल्शियम, आयरन और पोटैशियम जैसे खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसमें उपस्थित फ्लेवोनॉयड्स, फिनोलिक यौगिक एवं अन्य सक्रिय तत्व इसे एंटीऑक्सीडेंट, सूजनरोधी एवं रोगप्रतिरोधक गुण प्रदान करते हैं, जबकि इसके बीजों का ओलिक अम्ल युक्त तेल हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना जाता है।

शिग्रु (**Moringa oleifera**) - उपयोगी भाग एवं आयुर्वेदिक मात्रा

उपयोगी भाग	आयुर्वेदिक नाम	प्रयुक्त रूप	मात्रा	ग्रंथीय संकेत
पत्ते	शिग्रु पत्र	स्वरस	10-20 मि.ली.	चरक, भावप्रकाश
		चूर्ण	3-6 ग्राम	भावप्रकाश निघण्टु
फल	शिग्रु फल	क्वाथ	50-100 मि.ली.	सुश्रुत संहिता
बीज	शिग्रु बीज	चूर्ण	1-2 ग्राम	भावप्रकाश
छाल	शिग्रु त्वक्	क्वाथ	50-100 मि.ली.	चरक संहिता
जड़	शिग्रु मूल	चूर्ण	250-500 मि.ली.	सुश्रुत संहिता
फूल	शिग्रु पुष्प	क्वाथ/आहार	50-100 मि.ली.	भावप्रकाश

शिग्रु उष्ण एवं तीक्ष्ण प्राकृति का द्रव्य होने के कारण पित्त प्रकृति, गर्भावस्था एवं अधिक मात्रा में प्रयोग से बचना चाहिए। मात्रा रोग, आयु एवं अग्नि के अनुसार चिकित्सक द्वारा समायोजित की जाती है।

मोरिंगा विभिन्न भागों के प्रमुख उपयोग, उपयोग की विधि के साथ

1. पत्तियाँ (**Leaves**): मोरिंगा की पत्तियाँ पोषण और बलवर्धन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। पत्तों का चूर्ण 3-6 ग्राम गुनगुने पानी या दूध के साथ लिया जा सकता है। रक्ताल्पता (**Anemia**) में पत्तों का रस प्रतिदिन 10-20 मि.ली. लाभकारी होता है। मधुमेह रोगियों के लिए सुबह खाली पेट 3 ग्राम पत्ते का चूर्ण उपयुक्त है। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए सूखे पत्तों का चूर्ण शहद के साथ लिया जा सकता है। सूजन या शोथ में पत्तों का लेप बाह्य रूप से लगाया जाता है। त्वचा रोगों में पत्तों का रस आंतरिक रूप से उपयोगी है। नेत्र स्वास्थ्य के लिए पत्तों की सब्जी नियमित आहार में शामिल करें। स्तन्यजनन (दुग्धवृद्धि) में पत्तों का सूप लाभकारी होता है।

2. फल (**Pods / Drumstick**): मोरिंगा की फली वात रोगों और आमवात में स्नेहयुक्त सब्जी के रूप में उपयोग की जाती है। शूल (दर्द) में फल का क्वाथ 50-100 मि.ली. सेवन किया जाता है। अग्निमांद्य और पाचन सुधार के लिए फली का सूप लाभकारी है। कफ विकार, कृमि और मूत्रकृच्छ्र में भी फली का क्वाथ उपयोग

में आता है। हृदय स्वास्थ्य के लिए उबली हुई फली आहार में शामिल करें। अर्श (बवासीर) में फली की सब्जी लाभकारी होती है।

3. बीज (**Seeds**): बीज का चूर्ण 1–2 ग्राम कृमिनाशन के लिए लिया जाता है। शोथ में बीज चूर्ण गुनगुने पानी के साथ उपयोगी है। हाइपरलिपिडेमिया में सीमित मात्रा में बीज चूर्ण लाभकारी है। त्वचा रोग और संक्रमण में बीज का तेल ब्रह्म रूप से लगाया जाता है। जल शुद्धीकरण में परंपरागत रूप से बीज पाउडर का उपयोग किया जाता है। मधुमेह में बीज चूर्ण केवल चिकित्सकीय निगरानी में लिया जाना चाहिए।

4. छाल (**Bark**): छाल का क्वाथ वात-कफ विकार, शोथ, दर्द, कृमि, अर्श, ज्वर, गुल्म और शूल में आंतरिक रूप से लिया जा सकता है। त्वचा रोगों और घावों में छाल के कषाय से प्रक्षालन किया जाता है।

5. जड़ (**Root**): अत्यंत तीक्षण-सीमित एवं चिकित्सकीय देखरेख में ही प्रयोग करें वातज शूल, आमवात, कफ विकार, gulm और कठिन वात रोगों में मूल का क्वाथ या चूर्ण उपयोगी है। सूजन और शूल में मूल का लेप बाह्य रूप से लगाया जाता है। अग्नि प्रदीपन और स्त्रोत शोधन के लिए भी मूल चूर्ण/ क्वाथ का उपयोग किया जाता है।

6. पुष्प (**Flowers**): पुष्प का क्वाथ पाचन सुधार, शोथ और मूत्र विकारों में लाभकारी है। कफ शमन और हृदय बल के लिए पुष्प सूप उपयोग किया जाता है। भूख वृद्धि में पुष्प भाजी, सामान्य स्वास्थ्य में पुष्प का आहार रूप से सेवन लाभकारी है। अर्श, ज्वर और दुर्बलता में भी पुष्प का क्वाथ या सूप उपयोगी है।

मोरिंगा (शिग्रु / सहजन) - सावधानियाँ एवं दुष्प्रभाव

मोरिंगा (सहजन/शिग्रु) एक लाभकारी औषाधीय पौधा है, लेकिन अधिक या गलत सेवन से पेट में जलन, गैस, दस्त, चक्कर या सिरदर्द हो सकता है। गर्भवती महिलाएँ, पित्त प्रकृति वाले व्यक्ति और मधुमेह या रक्तचाप की दवा लेने वाले लोग बिना चिकित्सक की सलाह नियमित सेवन न करें। विशेष रूप से जड़, छाल और बीज का आंतरिक प्रयोग केवल आयुर्वेदिक चिकित्सक के मार्गदर्शन में ही किया जाना चाहिए।

Do's (क्या करें)

सीमित मात्रा में पत्तों का सेवन करें, पित्त प्रकृति में घृत/दूध के साथ लें, फल को पकाकर ही सेवन करें, मधुमेह/बीपी में चिकित्सकीय निगरानी रखें, जड़, छाल, बीज शोधन के बाद ही लें, बच्चों व वृद्धों में कम मात्रा दें, एलर्जी होने पर तुरंत बंद करें, अल्पकालीन उपयोग सुरक्षित है, गर्मियों में मात्रा कम रखें, आयुर्वेदिक सलाह का पालन करें।

Don'ts (क्या न करें)

अत्यधिक मात्रा में रोज़ाना सेवन न करें, खाली पेट अधिक मात्रा में न लें, कच्ची फली या कच्चे बीज न खाएँ, दवाओं के साथ बिना सलाह सेवन न करें, बिना शोधन जड़/बीज का सेवन न करें, गर्भावस्था में प्रयोग न करें, लक्षणों की अनदेखी न करें, लंबे समय तक उच्च मात्रा न लें, उष्ण रोगों में अंधाधुंध प्रयोग न करें, स्वयं औषधि के रूप में प्रयोग न करें।

फरवरी महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा, अपने कार्यों को प्रयत्न पुरुषार्थ से प्राप्त करेंगे। स्वस्थ शरीर, वाहन, भूमि-जायदाद प्राप्त होंगे। कार्य क्षेत्रों में सम्मान उल्लास एवं वृद्धि, आपका मनोबल धैर्य पूर्ण बना रहेगा। अपनों का सहयोग, इष्ट मित्रों का साथ, दाम्पत्यजीवन सुखमय रहेगा।

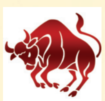

वृषभ राशि - मासफल मध्यम रहेगा। व्यवस्थित दिनचर्या के कारण शारीरिक सुख, आर्थिक स्थिति मजबूत, परिश्रमानुकूल सफलता, नौकरी में उल्लास, उद्योग धन्धों में सफलता, विद्या में प्रगति उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन कुछ चिन्ता बढ़ायेगा। साधु समागम, सामाजिक धार्मिक कार्यों में रुचि, यात्रा।

मिथुन राशि - आरोग्य सुख, व्यावहारिक कुशलता में वृद्धि, धार्मिक कार्यों से आत्मिक सुख, संयमित व्यवहार पूजा आराधना से रूके हुए कार्यों में प्रगति, कार्य-व्यापार में सफलता, धनागम का योग बन रहा है, उच्च एवं विशिष्ट लोगों से सम्पर्क होने के कारण लाभ का अवसर मिलेगा, जिससे वाद-विवाद होने के कारण मानसिक तनाव, पत्नी को प्रसन्न रखे।

कर्कटक राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा। योग-व्यायाम करने से शरीर स्वस्थ, आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगा। कार्यों में सफलता पूर्ण पारिश्रमिक मिलेगा, कार्य क्षेत्रों में उत्तरोत्तर वृद्धि होंगे। छात्रों के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता, राजनीतिक क्षेत्रों में सफलता।

सिंह राशि - शारीरिक-मानसिक स्थिति प्रबल के कारण आरोग्य सुख, अपने स्वभाव को संतुलित कर रखें शीघ्र उग्रता में न आयें वरना भुगतना पर सकता है, दूसरों के ऊपर विश्वास न करें अपने मन की बात करें। आर्थिक स्थिति मजबूत, रचनात्मक-विकासात्मक प्रयासों में सफलता, दाम्पत्य सुख, शनि के कारण मन में क्रोध दिखेगा।

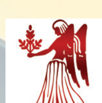

कन्या राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न, उद्योग-व्यापार क्षेत्रों में सफलता, दैनिक क्रियाकलापों में अनुकूलता, दाम्पत्य सौहार्द्र, नौकरी में उल्लास, विवेकशीलता की वृद्धि होगी। सन्तान का भाग्योदय होगा, धन लाभ के अवसर बढ़ेंगे। नौकरी क्षेत्रों में पदोन्नती, बाहर सुख, सामाजिक पक्ष मजबूत होगा।

तुला राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक सिद्ध होगा। पारिवारिक सामाजिक दायित्वों का उचित निर्वहन, आर्थिक पक्ष मजबूत होंगे। सामयिक-सामाजिक विकास, चोट-दुर्घटना से सावधानी, उद्योग व्यापार अनुकूल रहेगा।

वृश्चिक राशि - यह माह आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। कार्यक्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन, लाभ के अनेकानेक अवसर मिलेंगे। दाम्पत्यजीवन सुखमय रहेगा, अभीष्ट कार्य की सिद्धि, सम्मान-स्वाभिमान के साथ जीवन यापन करेंगे, उच्चपदाधिकारी से मेलजोल रखने से नवीन पद की प्राप्ति, पदोन्नति, पारिवारिक उल्लास बना रहेगा।

धनुष राशि - शारीरिक सुख, अपने ऊपर इतना विश्वास न करे मन को शान्त रखें अर्थात् आत्मविश्वास से बचें। देवी आराधना करें जिससे अनेक लाभ प्राप्त होंगे। मन को शान्त रखें विचारों में उग्रता, आर्थिक पक्ष मजबूत, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति।

मकर राशि - यह मास आपके लिए उत्तमसिद्ध होगा। आपका मंगल उच्च होने के कारण आपके व्यक्तित्व को निखारेगा। प्रतिष्ठा-मान-यश-प्रभाव का विस्तार होगा। राजकार्य में समुन्नति, स्वजनों से अनुकूलता, सट्टा-लाटरी से लाभ, मित्रों का सहयोग।

कुंभ राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा। इस मास में ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल प्रभावी नहीं है। मानसिक शारीरिक व्यथा, चोट-दुर्घटना, वाहन से कष्ट, कौटुम्बिक सुख, छात्रों के लिए समय शुभद। उत्तरार्ध में राहत सभी क्षेत्रों में दिखेगा।

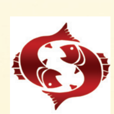

मीन राशि - इस माह में आप सुख का अनुभव करेंगे। रुचिकर भोजन, शारीरिक सुख, अपने सहयोगियों एवं मित्रों का सहयोग-समर्थन मिलेगा, आर्थिक संतुलन उग्र-प्रवृत्तियों से मुक्ति, बौद्धिक चेतन का विकास, सम्मान में वृद्धि, राजकीय समर्थन, उत्तरार्ध में ग्रहों का बदलाव सकारात्मकता में वृद्धि करायेगा।

(नीतिकथा)

अनमोल भेंट

- श्री के.रामनाथन

प्राचीन काल में, एक शांत स्थान पर स्थित उस आश्रम में एक ज्ञानी और दयालु गुरु अपने चार समर्पित शिष्यों को जीवन और धर्म की शिक्षा दे रहे थे। उनका नाम था धर्मानंद।

एक दिन, सभी शिष्यों को पाठ पढ़ाने के बाद, गुरु ने उन्हें अपने पास बुलाया। उनकी आँखों में एक विशेष चमक थी।

गुरु धर्मानंद ने स्नेहपूर्वक कहा, ''मेरे प्रिय बालकों, तुमने शास्त्रों का ज्ञान तो प्राप्त कर लिया है, पर अब मैं तुम्हारी हृदय की परीक्षा लेना चाहता हूँ। कल तुम सब मेरे लिए एक ऐसी वस्तु लेकर आना जो तुम्हारे अनुसार, सच्चे और निस्वार्थ प्रेम का प्रतीक हो।''

गुरु का आदेश सुनकर चारों शिष्य गहन चिंतन में डूब गए और अपने-अपने घरों को रवाना हुए।

अगले दिन सुबह, आश्रम का वातावरण शांत था। चारों शिष्य एक-एक करके गुरु के सामने उपस्थित हुए।

पहला शिष्य, जो कला और सौंदर्य प्रेमी था, गुरु के चरणों में झुका। उसने सावधानी से पकड़ा हुआ एक अत्यंत सुंदर और सुगंधित कमल का फूल गुरु को भेंट किया।

उसने कहा, ''गुरुदेव, मैंने सोचा कि ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना, यह फूल, सौंदर्य और निर्मलता का प्रतीक है। यही मेरे लिए सबसे शुद्ध प्रेम का प्रतिनिधित्व करता है।''

दूसरा शिष्य, जो वस्तुओं पर अधिकार जमाने की प्रवृत्ति रखता था, आगे बढ़ा। उसने एक छोटे से डिब्बे में एक रंग-बिरंगी, मनमोहक तितली गुरु के सामने रखी, जिसे उसने बहुत प्रयास से पकड़ा था।

उसने गर्व से कहा, ''गुरुदेव, यह तितली इतनी चंचल और सुंदर थी कि मेरा मन इस पर अटक गया। मैंने इसे पाने की तीव्र इच्छा रखी और इसे हासिल किया। मेरे लिए, जो चीज़ मुझे सबसे प्रिय लगी और जिसे मैंने अपना बना लिया, वही सच्चे प्रेम की भेंट है।''

तीसरा शिष्य, जो व्यावहारिकता में विश्वास रखता था, हाथ में एक तंदुरुस्त, बड़ी मुर्गी लिए खड़ा था।

उसने विनम्रता से भेंट सौंपते हुए कहा, ''गुरूजी, यह मुर्गी बहुत उपयोगी है; आस-पास को साफ-सुथरा रखती है; यह अंडे देती है और यह बहुत कीमती भी है। मैंने सोचा कि जो वस्तु हमारे लिए सबसे अधिक उपयोगी और मूल्यवान हो, उसे ही प्रेमपूर्वक अर्पित करना चाहिए।''

अंत में, चौथा शिष्य, जिसका नाम दयासार था, खाली हाथ गुरु के पास आया। उसके चेहरे पर शांति और थोड़ी सी उदासी थी।

उसने गुरु के चरण स्पर्श किए और नम्रता से अपनी बात कहना शुरू की :

''गुरुदेव, मैं भी आपकी आज्ञा मानकर उपवन गया।

मैंने वहाँ वही सुंदर फूल देखा जिसे मेरे भाई ने भेंट किया। मैं उसे तोड़ने ही वाला था कि मेरे मन में विचार आया - इसे तोड़ने से इसकी कोमल आत्मा को पीड़ा होगी और यह कुछ ही

देर में मुरझाकर अपनी सुंदरता खो देगा। मैंने सोचा, क्या किसी की सुंदरता को नष्ट करना प्रेम हो सकता है? इसलिए, मैंने उसे वहीं खिलने दिया।

फिर मेरी नज़र उस रंग-बिरंगी तितली पर पड़ी। वह आज़ादी के आकाश में नाच रही थी। उसे पकड़ने की लालसा मेरे मन में भी उठी, पर अगले ही पल मैंने सोचा - यह स्वतंत्रता ही उसका जीवन है। अगर मैंने इसे पकड़ लिया, तो यह बंधन में तड़पेगी। क्या किसी को कष्ट देकर उसे कैद करना प्रेम है? मैंने अपने हाथ खींच लिए और उसे उड़ने दिया।

अंत में, मैंने एक मुर्गी को देखा जो अपनी जान से प्यारे छोटे चूज़ों को बड़ी ममता से दाना चुगा रही थी। मुझे लगा, अगर मैंने इस मुर्गी को पकड़ा और आपसे भेंट कर दिया, तो इसके बच्चे अपनी माँ से बिछुड़कर रोएँगे और भूखे रह जाएँगे। मैंने सोचा, क्या किसी माँ और बच्चे के बीच वियोग उत्पन्न करना प्रेम हो सकता है? यह विचार आते ही मेरा हृदय पिघल गया और मैंने मुर्गी को भी वहीं छोड़ दिया।

इसलिए, गुरुदेव, मैं आपके लिए कोई भौतिक वस्तु नहीं ला पाया। मैंने बस प्रेम की खातिर किसी को दुख न पहुँचाने का प्रयास किया। मुझे क्षमा करें।''

गुरु धर्मानंद शांत भाव से सब कुछ सुन रहे थे। उन्होंने एक गहरी साँस ली और मुस्कुराते हुए खड़े हुए। उन्होंने पहले तीन शिष्यों की ओर देखा और फिर दयासार की ओर मुड़े।

गुरु ने चौथे शिष्य को स्नेह से अपने पास बुलाया और उसके सिर पर हाथ रखा।

उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, ''मेरे प्यारे शिष्यों! तुम तीनों ने भौतिक सुंदरता, स्वामित्व और उपयोगिता को प्रेम समझा। लेकिन दयासार, तुमने आज मुझे जीवन का सबसे बड़ा सत्य सिखाया है।''

''सुनो! किसी वस्तु को पाना या देना प्रेम नहीं है। सच्चा प्रेम वह है जो दूसरों कि पीड़ा को महसूस करे और किसी को भी कष्ट न पहुँचाए। जब तुमने फूल को मुरझाने से बचाने के लिए नहीं तोड़ा, तितली को उसकी आज़ादी छीनने से रोकने के लिए नहीं पकड़ा और चूज़ों को उनकी माँ से अलग होने के दुख से बचाने के लिए मुर्गी को छोड़ दिया-वही सच्चा प्रेम है!''

गुरु धर्मानंद ने घोषणा की ''दयासार, तुम्हारा यह त्याग और करुणा का भाव ही मुझे दिया गया सबसे श्रेष्ठ, सबसे पवित्र और सबसे अनमोल उपहार है। तुम ही सच्चे अर्थों में 'जीवों पर प्रेम' का अर्थ समझे हो।''

सीख -

सच्चा प्रेम केवल मानव तक सीमित नहीं है। यह हर प्राणी की पीड़ा को समझना, उनके अधिकारों का सम्मान करना और उन्हें बिना शर्त करुणा प्रदान करना है।

मार्च 2026

03. श्री लक्ष्मीजयंती, होली, श्री कुमारधारा तीर्थ मुक्कोटी
15. अन्नमय्या वर्धंति
17 से 25 तक तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
19. 'श्री पराभव' नामक तेलुगु नूतन वर्ष 'उगादि'
21. मत्स्य जयंती
24 से अप्रैल 01 तक वायल्पाडु
श्री पट्टाभिरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
26 से अप्रैल 03 तक ओंटिमिट्टा
श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
27. श्रीरामनवमी
30 से अप्रैल 01 तक तिरुमल
श्री बालाजी का वसंतोत्सव

चित्रकथा

माँ के प्यार के सामने नतमस्तक होने ही होगा

तेलुगु मूल - 'कलारत्न' डॉ.के.रविचंद्रन
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री तुंबलि शिवाजी

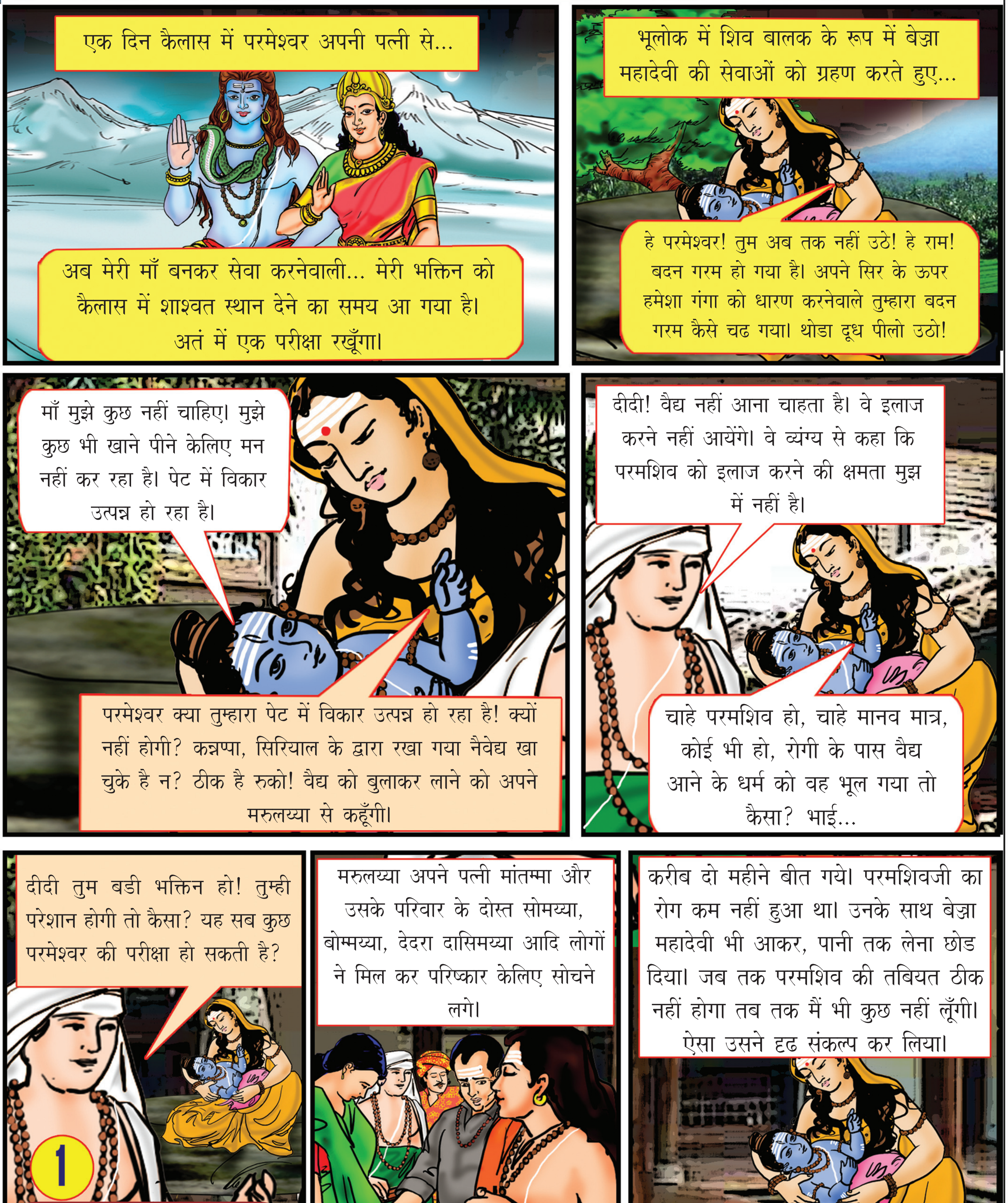

सब लोग मिलकर बेज्ञा महादेवी के घर चलेंगे। वे जब तक साधारण स्थिति में नहीं आयेंगे, तब तक पंचाक्षरी का जप करते आगे चलेंगे...
अपनी ओर से कोशिश करेंगे। सब लोग स्नान करके शिव लिंग की पूजा करके यहाँ से ही उस परम शिव की स्तुति और भजन करते हुए चलेंगे।
बेज्ञा महादेवी जी वही काम कर रही है न? वे जो भी काम करते समय पंचाक्षरी को ही जप करती रहेगी। नींद में भी पंचाक्षरी को नहीं भूलती है। वह परमशिव के अनन्य भक्तिन होने के कारण हमेशा शिव ध्यान में ही रहती है।
सब लोग ओम नमः शिवाया, ओम नमः शिवाया... कहते हुए बेज्ञा महादेवी के घर पहुँच गये।
बेटा अब मैं इस दर्द को बर्दाश नहीं कर सकती। बालक अब मैं अपने प्राण छोडूँगी।
माँ! बेज्ञा महादेवी! तुम्हे क्या वर चाहिए पूछो?
परमशिव अब तुम बीमार न होकर तंदुरुस्ती से रहोगे तो वही काफी है।
परमभक्तिन 'आप जैसे लोग अपने मन को ही नैवेद्य के रूप में चढा रहे तो हमें बीमार कैसे होगी। हर एक माँ अपने बच्चों को देवता स्वरूप जैसा मान कर उपचार करते हुए क्रमबद्ध प्रशिक्षण के साथ-सुधार किया जाए तो सब ठीक रहेंगे। अन्य भक्त लोग किसी न किसी प्रकार मुझ से कुछ न कुछ वर माँगा है। कुछ भी न माँग कर माँ बनकर उसने हमें लाड प्यार से पाला। मेरी माँ को अभी से कैलास में स्थान सुस्थिर हुई है।
बेज्ञमाँ की वजह से तुम और आप के परिवार पर मैं प्रसन्न हुई। आप सब लोग अपना कर्म फल को भोग ने के बाद ही कैलास पहुँचेंगे। इस माँ के प्यार के प्रति हम पुनः नमन करते हैं।
धन्य हूँ परमशिवा! धन्य हूँ।
2

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर......................
पता...
....
मोबाइल नं..

क्विज-43

1) तिरुमल पहाड के तलहटी में विराजित शैव मंदिर का नाम क्या है?
ज)...

2) श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर परिसर में प्रसिद्ध जलधारा का नाम क्या है?
ज)...

3) श्रीनिवास ने किससे विवाह करने का सन्नद्ध हुई?
ज)...

4) लेपाक्षी में विराजित भगवान का नाम क्या है?
ज)...

5) गुरु का नाम क्या है?
ज)...

6) 'सूरसागर' का लेखक कौन है?
ज)...

7) मोरिंगा का कुल वर्ग का नाम क्या है?
ज)...

8) भगवान शिव को शिशु के रूप में किसने पालन पोषण किया?
ज)...

9) बेज्ञा महादेवी का सहोदर का नाम क्या है?
ज)...

10) श्रीनिवास ने अपना विवाह संपन्न कराने के लिए किससे ब्याज लिया?
ज)...

11) अहोबिल में विराजित देवता मूर्ति का नाम क्या है?
ज)...

12) श्रीनिवास ने कुबेर से ब्याज लिया विषय का साक्षीकारक कौन है?
ज)...

13) तिरुचानूर में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?
ज)...

14) पार्वती देवी का पति का नाम क्या है?
ज)...

15) मोरिंगा का वानस्पतिक नाम क्या है?
ज)...

बिंदी को जोड़िए

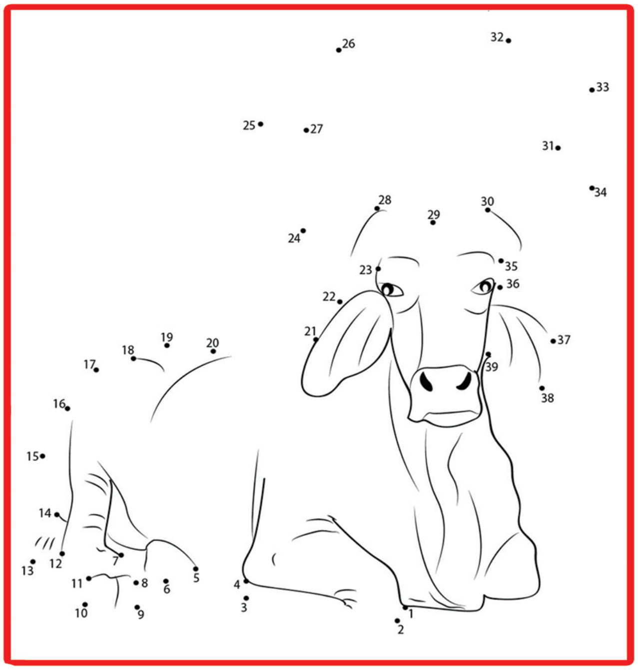

रंगों को भरिये क्या!

पंचभूतात्मक शिवलिंग

पृथ्वी, आकाश, अग्नि, वायु और जल को पंचभूत कहते है। इनके प्रतीकात्मक रूप में विराजित लिंग को ही पंचभूतात्मक शिवलिंग कहते हैं। और उनका संक्षिप्त परिचय बाल-बच्चों के लिए...

तमिलनाडु में स्थित एकाम्बरेश्वर मंदिर में भगवान शिव एकाम्बरनाथ और राजलिंगेश्वरम के नाम से प्रसिद्ध है। पृथ्वी तत्व से संबंधित यह मंदिर में माँ पार्वती का नाम एलावर्कुझली है।

तमिलनाडु में स्थित जम्बुकेश्वर मंदिर में भगवान शिव जल तत्व का प्रतीक है। माँ पार्वती अखिलांडेश्वरी है।

तमिलनाडु में स्थित अग्नि लिंग तत्व से संबंधित भगवान शिव अरुणाचलेश्वर नाम से प्रसिद्ध है। माँ पार्वती का नाम उन्नामलाई अम्मन है।

आं.प्र. में स्थित शिव भगवान का नाम श्रीकालहस्तीश्वर है। माँ पार्वती का नाम ज्ञानप्रसूनांबा है। यह मंदिर वायुलिंग तत्व का प्रतीक है।

तमिलनाडु में स्थित आकाश तत्व शिव लिंग को थिल्लई नटराज स्वामी कहते है। माँ पार्वती का नाम शिवकामसुंदरी है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

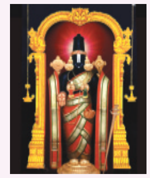

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

. . . .

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359, 2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर : 2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2026 फरवरी 07 से 17 तक

07-02-2026 शनिवार
रात - मूषिकवाहन पर गणपति, अंकुरार्पण

08-02-2026 रविवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - हंसवाहन

09-02-2026 सोमवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

10-02-2026 मंगलवार
दिन - भूतवाहन
रात - सिंहवाहन

11-02-2026 बुधवार
दिन - मकरवाहन
रात - शेषवाहन

12-02-2026 गुरुवार
दिन - तिरुच्चि उत्सव
रात - अधिकारनंदिवाहन

13-02-2026 शुक्रवार
दिन - व्याघ्रवाहन
रात - गजवाहन

14-02-2026 शनिवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - अश्ववाहन

15-02-2026 रविवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - नंदिवाहन (महाशिवरात्रि)

16-02-2026 सोमवार
दिन - पुरुषामृगवाहन
रात - तिरुच्चि उत्सव कल्याणोत्सव

17-02-2026 मंगलवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन पर नटराजस्वामी, त्रिशूलस्नान
रात - ध्वजावरोहण, रावणासुरवाहन

तरिगोंडा श्री लक्ष्मी नरसिंहस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

दिनांक	वार	दिन	रात
23-02-2026	सोमवार	- - -	अंकुरार्पण
24-02-2026	मंगलवार	ध्वजारोहण	- - -
28-02-2026	शनिवार	- - -	गरुड़वाहन
03-03-2026	मंगलवार	रथोत्सव, मोतीवितानवाहन	- - -
04-03-2026	बुधवार	तीर्थवारी, अवभृथं, चक्रस्नान	ध्वजावरोहण

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-01-2026 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No. 10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.

भवजलधिगतानां द्वंद्व वाताहतानं
सुत दुहितृ कलत्रत्राण भारार्दितानां
विषम विषयतोये मज्ञता मप्लवानां
भवति शरणमेको विष्णुपोतो नाराणां

- मुकुंदमाला